॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

नवम्बर 2017 वर्ष 20, अंक 11
विक्रमी सम्वत् 2074
एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 20

धर्म के नाम पर...

❒ राम निवास 'गुणग्राहक'

''धर्म'' शब्द की लोकप्रियता सर्वविदित है। धर्म के प्रतिमानव के मन में स्वाभाविक लगाव और आकर्षण स्पष्ट दिखाई देता है। इतना होने पर भी धार्मिक कहलाने वाले लोगों ने धर्म को जानने-समझने कर कभी प्रयास नहीं किया। जीवन के हर कार्य व्यवहार को बुद्धिपूर्वक विचार कर करने वाले सुशिक्षित व्यक्त भी धर्म के मामले में पूरी तरह से उन पण्डितों पर निर्भर रहते हैं, जिन्होंने कर्मकाण्ड से सम्बन्धित कुछ श्लोक या मन्त्र ही रटे होते हैं। सम्भवत: किसी बड़े नगर में दो-आर ब्राह्मण मिल जाएं जो धर्म और ईश्वर विषय पर काम चलाऊ चर्चा कर सकें। इस प्रकार धर्म और ईश्वर के सम्बन्ध में देश में पाखण्ड और अन्धविश्वासों का ही बोलबाला है। यहीकारण है कि जो देश भारत कभी अपनी धार्मिक भावनाओं एवं सांस्कृतिक जीवन मूल्यों की सुरक्षा के लिए प्राणों की बाजी लगा देता था, आज उसी देश के कथित धर्मगुरु अपने अन्धभक्तों को अपने ही देश की सम्पत्ति को जलाने निर्दोष लोगों को मार डालने तक के लिए तैयार कर लेते हैं। क्या इसे धार्मिकता कहा जा सकता है? एक धर्म गुरु कहलाने वाला व्यक्ति क्यों अपने अनुआइयों को सत्य और न्याय की शिक्षा नहीं देता? महर्षि मनु की दृष्टि में तो सत्य ही धर्म है। वे लिखते हैं-''नहि सत्अत् परो धर्म: नाऽनृतात् आतंक परम्''। अर्थात सत्य से बड़ा कोई धर्म नहीं और झूड़ से बड़ा कोई आप नहीं। महर्षि व्यास जी के शब्दों में तो धर्म सत्य से जन्म लेता है-'सत्अत् उत्पन्न धर्मम'।

जहां सत्य का उपदेश न होता हो, न्याय की शिक्षा नहीं दी जाती हो, वहाँ धर्म की कल्पना भी नहीं की जा सकती। हम खुली आँखों से धर्माचारो कहलाने वालों के अधर्म देख रहे हैं। यह समस्या राम रहीम सिंह की हो, आ रामपाल दास-आसाराम की ही हो, ऐसी बात नहीं है। देश ने बाल योगेश्वर हंस जैसे धर्म के ठेकेदारों का अधर्म भी देखा है। चन्द्रा स्वामी का चमत्कार भी देखा है, ऐसे लोगों के काले कारनामों का चरित्र-चित्रण करने के स्थान पर अधिक उपयोगी होगा कि हम भारत के धर्म भीरु लोगों को धर्म और धार्मिकता का सच्च स्वरूप समझा दें। सबसे पहले हम मानव धर्म शास्त्र के प्रारम्भिक निर्माता महर्षि मनु की बात करें तो मनु लिखते हैं-'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्''-अर्थात् सम्पूर्ण वेद धर्म कर मूल स्रोत है। 'वेद प्रतियादितो धर्म: अधर्मस्तछिपर्यय:''। वेदजिस कर्म को करने का आदेश देता है, वह धर्म है और इसके विपरीत करना अधर्म है। इसलिए वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना जहां नहीं होता, वहां धर्म का सच्चा स्वरूप नहीं मिल सकता। वेद परमात्मा हर मानव की पहली पीढ़ी के चार ऋषियों को दिया गया वह ज्ञान-विज्ञान है, जिसे सृष्टि कर अटल संविधान कहा जाता है। धर्म और ईश्वर का सच्चा स्वरूप जानने की जिनकी इच्छा है वे वेद अवश्य पढ़े।

धर्म के सम्बन्ध में मनु महाराज का एक बड़ा प्रसिद्ध श्लोक है जिसमें वे धर्म के दस लक्षण बताते हैं। धृतिः क्षमा दमोअस्तेय शौचं इन्द्रिय निग्रह:।

धीविद्या सत्यं अक्रोधो, दशकं धर्म लक्षणम्:॥

अर्थात् धैर्य, क्षमा, मन पर नियन्त्रण, चोरी न करना, मन, कर्म, वचन की पवित्रता, इन्द्रियों को वश में करना, सद्बुद्धि, विद्या, सत्य और क्रोध न करना ये दस लक्षण धर्मात्मा पुरुष के हैं। ये दस सद्गुण जिस व्यक्ति के स्वभाव में हों, समझो वह धर्मात्मा है। आज हमारे धर्माचार्य कहलाने वालों के जीवन में इनमें से एक भी गुण स्वाभाविक रूप से दिखाई नहीं देता। यूँ दिखावे के लिए जब-तब कुछ महानता छलक जाए तो दूसरी बात है।

हम गलती कहाँ कर रहे हैं-धर्म के सच्चे स्वरूप को न समझने के कारण हम समाज कल्याण से जुड़े हुए कार्य करते हुए धर्म के नाम पर मीठी-मीठी बातें बनाने वालों को धर्माचारी अधर्म गुरु मन लेते हैं। समाज हित के काम करना बहुत अच्छी बात है, यह भी व्यवहार के धरातल पर धर्म का अंग है। लेकिन इसके साथ-साथ हमारे जीवन की व्यक्तिगत पवित्रता, सरलता, न्याय प्रियता, विद्या, विनम्रता और सत्यवादिता आदि गुण नहीं दिखते, तप-साधना, ईश्वर-विश्वास जैसे गुण नहीं दिखते तो वहाँ धर्म और धार्मिकता मात्र दिखावे की ही रह जाती है। एक धर्मगुरु को किले जैसा आश्रम बनाने की क्या अवश्यकता? हमारे ऋषि मुनि वनों में घास-फूंस की कुटी बनाकर रहते थे। जिसे समाज की सेवा में जीवन लगाना है, उसे न तो किसी से डरने की आवश्यकता होती है और न अपनी सुख-सुविधा के लिए राजसी

(शेष पृष्ठ 17 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी

पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी जी के नेतृत्व में कैलाश सत्यार्थी की भारत यात्रा का डी.ए.वी. द्वारा मुम्बई आगमन पर भव्य स्वागत

सर्वविदित् है कि नोबल पुरस्कार प्राप्त श्री कैलाश सत्यार्थी (प्रमुख बचपन बचाओ आन्दोलन) की **सुरक्षित बचपन सुरक्षित भारत** के संदर्भ में कन्याकुमारी से प्रारंभ की गई भारत यात्रा पूरे भारत का भ्रमण करती हुई बाल शोषण, बेटी का शारीरिक शोषण एवम् बलात्कार के विरूद्ध एक अखिल भारतीय जन जागरण इस संवेदनशील विषय को मध्य में रखते हुए मुम्बई भी पहुंची।

यहां यह सूचित करना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी जी प्रधान डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली ने आदरणीय कैलाश सत्यार्थी जी को उपरोक्त विषयों पर की जा रही जन जागरण भारत यात्रा में पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया था। इस उपलक्ष्य में कन्याकुमारी से श्रीनगर (जम्मू कश्मीर) तक जाने वाली इस भारत यात्रा का स्वागत सम्मान, एवम् उत्साहवर्धन उस हर शहर में किया जाएगा जहां डी.ए.वी. की शाखा होगी। इस संदर्भ में जहां-जहां से यह यात्रा निकली डी.ए.वी. के विद्यार्थियों ने मानव श्रृंखला बना कर हाथों में झंडे लिए मुख से

(शेष पृष्ठ 19 पर)

दया का सागर दयानन्द

महर्षि दयानन्द का जीवन हंस जैसा निर्मल और कमल की भांति था। उन्होंने बाल्यकाल से लेकर मृत्यु पर्यन्त, जितने भी काम किए वह संसार के महापुरुषों से निराले ही किए। गंभीर दृष्टि से विवेचन करने पर हमें उनका जीवन सूर्य जैसा तेजस्वी और चन्द्रमा जैसा शान्त और शीतल प्रतीत होता है। दयानन्द को समझन के लिए मनुष्य का हृदय शुद्ध, पवित्र और मस्तिष्क प्रखर होना आवश्यक है। समुद्र से मोती निकालने के लिए उसके नीचे जाकर डुबकी लगाने से ही मोती प्राप्त किए जा सकते हैं। इसी प्रकार से प्रत्येक मनुष्य को एकान्त में बैठ कर साधना द्वारा चिन्तन करने से दयानन्द रूपी रत्न की जानकारी प्राप्त हो सकती है।

दयानन्द तो बस, दयानन्द ही थे। उनके मुकाबले का आज तक कोई हुआ ही नहीं तो किससे उनकी उपमा दी जाये। वह महान् गुणों के भंडार थे, योगी थे, तपस्वी थे, ऋषि थे, युगद्रष्टा थे, क्रांतिकारी थे, दीन अनाथ विधवा के सच्चे हितैषी थे, सत्यवादी थे, साधक थे, देश हितैषी थे। इतना ही नहीं वह समाज सुधारक थे, पशु पक्षियों का दर्द भी उनके हृदय में था। हममें इतनी शक्ति ही कहां है जो उनके सम्पूर्ण गुणों का वर्णन कर सकें। फिर भी हमें प्रयत्न तो करना ही चाहिए कि दयानन्द रूपी रत्नागार में से कुछ रत्न मोती हीरे माणिक जो भी चिन्तन करके विचार की मथनी से मथ कर निकाल सकें निकालें और अपने जीवन को मालामाल करने के लिए भरसक प्रयत्न करें।

दयानन्द तू सचमुच ही दया का समुद्र था। जिस प्रकार समुद्र लबालब भरा रहता है उसी प्रकार तू भी हमेशा दया से भरपूर ही रहा। अनूप शहर में पान में विष देने वाले के ऊपर दया ही तो की। यदि दया न करता तो उसको जेल भिजवा देता। वृन्दावन में विरोधी लोगों के ईंट पत्थर बरसाने पर तू दया दिखा कर मुस्करा दिया और कहा जो कुछ इनके पास था वह ले आये। वरन् अपने भक्तों को तुम यह भी तो कह सकते थे कि वे भी जवाब में पत्थर मारेंगे। परन्तु ऐसा करने से दया निर्दयता में बदल सकती थी, फिर दयानन्द नाम कैसे सार्थक होता, दया के समुद्र की शोभा ही क्या रह जाती है, पर धन्य तू देव दयानन्द सचमुच ही तू दया का सागर था।

मथुरा में वैश्या आकर आपके कुन्दनसम जीवन को कलंकित करने का प्रयास करने लगी। परन्तु वहां पर भी तो दया के समुद्र ने अथाह दया की बूंदे बरसा कर वेश्या को चरणों में गिरने के लिए विवश कर दिया। यह कोई मामूली बात नहीं थी, यह कोई छोटी घटना नहीं थी। यदि आज दया का भंडार अपना खजाना न खोलता तो सदा सदा के लिए उस पुरातन काल के ऋषि विश्वामित्र की तरह दूषित हो जाता। परन्तु देव दयानन्द ने शरीर की सफेद चादर को जरा भी काला धब्बा नहीं लगने दिया और अपने भूषित जीवन को सुभूषित कर दिया।

एक दिन मेरा ऋषि हजारों लोगों के बीच अपनी मीठी और ओजस्वी वाणी से लोगों के मानस पटल की काई को धोने के लिए बोल रहा था। उसने अपनी मधुर वाणी को विराम दिया ही था कि एक नन्हें शिशु ने उनके मस्तक पर पत्थर मारा और उस पत्थर से दयानन्द के माथे से खून की धारा बह निकली। परन्तु दया के समुद्र ने खून की धारा की तनिक भी परवाह न करके प्रेम की धारा बहाते हुए कहा-क्यों पकड़ते हो इस अबोध बालक को। तुरन्त बालक से पूछा-क्या चाहिए तुझे? वह डर रहा था, कांप रहा था, भय से बोल नहीं पा रहा था। परन्तु दयानन्द ने दयाका हाथ आगे बढ़ा कर उसे प्यार देते हुए यह कहा, कहो दयानन्द से क्या चाहते हो? उसने कहा क्षमा दो, मेरा दोष नहीं, लड्डू देने का लालच देकर मुझे कहा गया कि आपको पत्थर मारा जाये। दयानन्द ने कहा-हो सकता है, वे लोग तुझे लड्डू दें या न दें, यह लो पांच रूपए इसके लड्डू लेकर स्वयं खाना और अपने साथी मित्रों को भी देना।

इसके अतिरिक्त नारी शिक्षा के क्षेत्र में जो ऋषि ने कार्य किया वह पूरे भारतवर्ष में अनय किसी समाज सुधारक ने नहीं किया। अजमेर में ऋषि निर्वाण शताब्दी के अवसर पर भारत का तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने आर्य समाज के मंच से यह घोषण की कि यदि स्वामी दयानन्द नारी शिखा का आन्दोलन न चलाते तो आज मैं भारत की प्रथम महिला प्रधानमन्त्री न होती।

इसके अतिरिक्त किसी भी धर्म अथवा समुदाय ने स्वामी जी के सिद्धान्तों पर अपनी टिप्पणी की हो, परन्तु नारी शिक्षा के क्षेत्र में किये गये स्वामी जी के कार्यो पर आज तक किसी ने भी आलोचनात्मक टिप्पणी नहीं की। आज भी हम देखते हैं कि वर्तमान में उत्तर भारत में जितने भी प्रमुख महिलाओं के शिक्षण संस्थान हैं, वह स्वामी दयानन्द, आर्य समाज और डी.ए.वी. की ही देन हैं। विशेषकर पंजाब की महिला शिक्षण संस्थाएं इसका जीता जागता उदाहरण हैं। इस स्वरूप में स्वामी दयानन्द ने जो स्त्रियों पर ऊपर अपनी दया का सागर न्यौछावर किया है, वह अपने में एक उदाहरण है।

धन्य दयानन्द तेरी दया। तेरे पास अटूट का भंडार था तभी तो जीवन भर बांटता रहा। तेरे जीवन की लीला भी दया के साथ ही समाप्त हुई। क्या अवस्था है। जगन्नाथ पापी ने दूध में विष घोल कर पिला दिया सारे शरीर में जलन हो रही है, रोम रोम छलनी हो गया, परन्तु दया से भरपूर दयानन्द को न अपने कष्ट की चिन्ता न शरीर से मोह। केवल ध्यान है तो इस बात का है कि कहीं जगन्नाथ पकड़ा न जाय। उसको बुला कर कहा यह थैली लो, इसमें रूपये हैं इससे तुम्हारा काम चल जाएगा। तुम यहां से कहीं दूर चले जाओ।

दयानन्द ने अपने नाम को तो सदा ही सार्थक किया था, परन्तु आज विश्व के इतिहास में सुनहरी अक्षरों में लिख जाने वाले काम करने का सौभाग्य भी प्राप्त कर लिया। संसार के लोगों को यह दिखा दिया कि तुम भी अपने जीवन को सुरभित करना चाहते हो तो मेरी तरह सुख दुःख की परवाह न करके मान अपमान की चिन्ता किए बिना कार्यक्षेत्र में उतर कर भूले भटके लोगों को मार्ग दिखाना तभी विश्व का कल्याण होगा अन्यथा नहीं हो सकता।

अजय टंकारावाला

टंकारा बोधोत्सव पर होने वाली प्रतियोगिताओं हेतु

निमन्त्रण

आगामी ऋषि बोधोत्सव 2018 के उपलक्ष्य में टंकारा ट्रस्ट की ओर से विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है। जिसमें भाग लेकर युवाशक्ति अपनी प्रतिभा उजागर करें.....

वॉलीबॉल (शूटिंग) टूर्नामेन्ट:

(सौराष्ट्र प्रदेश के युवाओं के लिए)

- प्रवेश पत्र दिनांक 01 फरवरी 2018 तक स्वीकृत होंगे।
- यह टूर्नामेन्ट 08 से 10 फरवरी, 2018 के बीच में टंकारा ट्रस्ट के परिसर में होगी।
- विजेता टीम को शील्ड प्रदान की जाएगी।
- खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया जायेगा।

प्रश्नमंच प्रतियोगिता

(सौराष्ट्र प्रदेश की शिक्षा संस्थाओं के विद्यार्थियों के लिए)

- कक्षा 7 से 9 तक के छात्र भाग ले सकते हैं।
- आर्यसमाज, वैदिक धर्म के सिद्धान्त और सामान्य ज्ञान पर प्रश्न पूछे जायेंगे।
- भाग लेने के इच्छुक विद्यालय के प्राचार्य अपने विद्यार्थियों के नाम 05 फरवरी 2018 तक संयोजक को पहुंचा दे।
- प्रथम सिलेक्शन राउन्ड (लिखित) दिनांक 12 फरवरी 2018 को प्रात: 10.00 बजे टंकारा ट्रस्ट परिसर में होगा। जिसमें प्रथम 14 स्थान प्राप्त करने वालों का अन्तिम राउन्ड (मौखिक) उसी दिन दोपहर 2.00 बजे ट्रस्ट परिसर में आयोजित होने वाले ऋषि बोधोत्सव में मुख्य मंच पर होगा।
- संदर्भ के लिए महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र और प्रारंभिक शिक्षा पुस्तकों का सहारा ले सकते हैं।

प्रारंभिक शिक्षा पुस्तक लेखक स्वामी शान्तानन्द सरस्वती भवानीपुर कच्छ

(उपरोक्त संदर्भ साहित्य निकटवर्ती आर्यसमाज से प्राप्त किया जा सकता है)

- प्रथम तीन विजेताओं को नगद पुरस्कार क्रमश: 500, 300, 200 प्रदान किया जायेगा, अन्यों को सांत्वना पुरस्कार दिया जायेगा।
- प्रत्येक को प्रमाण पत्र दिया जायेगा।
- बाहर से आने वाले प्रतियोगियों को टंकारा तक आने जाने का बस किराया दिया जायेगा।
- भोजन-आवास की सुविधा नि:शुल्क ट्रस्ट की ओर से मिलेगी।

डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार

यह प्रतियोगिता भारत के सभी गुरुकुलों के विद्यार्थियों के लिए होगी।

अत: समस्त गुरुकुलों के विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि टंकारा में प्रति वर्ष ऋषि बोधोत्सव पर डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार उस विद्यार्थी को दिया जाता है जिसको योग दर्शन के समस्त 195 सूत्र एवं यजुर्वेद के 40वें अध्याय के सब मन्त्र शुद्ध उच्चारण व ऋषि दयानन्द निर्दिष्ट अर्थ सहित कंठस्थ होंगे। जो ब्रह्मचारी इस प्रतियोगित में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने नाम अपने गुरुकुल में प्राचार्य के माध्यम से प्रमाणित किये हुए अपने फोटो सहित प्रतियोगिता संयोजक के पास भेज दे। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को पांच हजार रूपये नगद व स्मृति चिन्ह से पुरस्कृत किया जायेगा।

- भाग लेने के लिए गुरुकुल के प्राचार्य अपने छात्रों के नाम फोटो सहित दिनांक 01 फरवरी 2018 तक पहुंचा देवे।
- यह प्रतियोगिता ऋषि बोधोत्सव पर दिनांक 12.02.2018 दोपहर 2.00 से 5.00 के सत्र में होगी।
- एक गुरुकुल से अधिकतम दो विद्यार्थी भाग ले सकेंगे।
- बाहर से आने वाले प्रतियोगियों को टंकारा तक आने-जाने का साधारण किराया दिया जायेगा।
- भोजन-आवास की सुविधा टंकारा ट्रस्ट की ओर से नि:शुल्क होगी।
- अधिक जानकारी व नाम भेजने के लिए प्रतियोगिता संयोजक से सम्पर्क करें।

आचार्य रामदेव
(प्राचार्य), मो.9913251448

हसमुख परमार
ट्रस्टी/प्रतियोगिता संयोजक, मो. 9879333348

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

पो. टंकारा, पिन-363650, जिला-मोरबी (गुजरात)

पारिवारिक सौहार्द कैसे रहे?

❒ कृष्णचन्द्र टवाणी

समग्र विश्व विभिन्न राष्ट्रों में बंटा है, राष्ट्र की इकाई हैं शहर और ग्राम और इनकी अंतिम इकाई है परिवार। परिवार का अर्थ है-जहां माता-पिता, पुत्र-पुत्रियाँ, भाई-बहन, दादा-दादी, चाचा-चाची वगैरह एक साथ रहते हैं। एक का सुख सबका सुख और एक का दुख सबका दुःख होता है। सभी सदस्य केवल अपने ही लिये नहीं, परिवार के लिए जीते हैं। परिवार ही बालक के लिए सर्वप्रथम पाठशाला है जहां पर वह प्यार, प्रेम, सहयोग, स्नेह, संस्कार सभी का अनुभव करता है। एक अकेला व्यक्ति निरपेक्ष जीवन जीता है। किसी, भी परिवार के सदस्य जब मिलकर रहते हैं, उसका आधार होता है पारिवारिक सौहार्द। सौहार्द का अर्थ है स्नेह-संपूरित मैत्री भाव।

आज सौहार्द की नौका भौतिकवादी मूल्यहीन सभ्यता के सागर में डूब रही है। यह स्थिति चिंतनीय है, सोचनीय है इससे मानव जीवन की मुस्कान फीकी होती जा रही है, जीवन आज तनावग्रस्त और बोझिल होता जा रहा है। संयुक्त परिवार का जीवन हो चाहे एकल परिवार का, सुखमय जीवन का मूल बिन्दु तो वही सौहार्द है। जहां स्नेह नहीं, सहानुभूति नहीं, त्याग नहीं, सहनशीलता नहीं अर्थात् जिस परिवार में स्नेहिल मैत्रीभाव नहीं वहां प्रेम की, सुख शांति की सरिता नहीं बह सकती।

पूर्वकाल में पारिवारिक सौहार्द की समस्या इतनी जटिल नहीं थी। सौहार्द सहज था। क्रोध, द्वेष, ईर्ष्या पर सहज संयम का अंकुश निष्पक्ष था एवं दृढ़ व्यक्तित्व वाले मुखिया के संचालन में परिवार सहज गति से चलता था। परिवार के सैकड़ों सदस्य भी एक साथ रहते थे और सुविधा तथा गौरव का अनुभव करते थे। परिवार में नीति निर्धारण, योजना, गृहस्थी का संचालन, विवाह, शिक्षा, रोजगार, सभी की व्यवस्था परिवार के बुजुर्गों पर होती थी। युवापीढ़ी निश्चित होकर काम करती थी। परिवार का संचालन उनकी समस्या नहीं थी। वृद्धजनों के स्नेह-संरक्षण में नई पौध विकास की गति पर सहजरूप से बढ़ती चलती थी। क्योंकि वे सब एक-दूसरे को अपनाना जानते थे, रिश्तों को हृदय से स्वीकारते थे। सहिष्णुता के अभाव में तो सौ क्या दो व्यक्ति भी साथ जीवन निर्वाह नहीं कर सकते।

एक बादशाह ने अपने वजीर के बारे में सुना कि उसके परिवार में लगभग सौ व्यक्ति एक चूल्हे पर भोजन करते हैं, साथ रहते हैं, सब सुखी हैं, परिवार में कोई विवाद नहीं, झगड़ा नहीं। बादशाह स्वयं उस परिवार की स्थिति का जायजा लेने वजीर के घर पहुंचे। वहाँ जो कुछ सुना था उससे भी अधिक व्यवस्था, अनुशासन, शांति और सबके चेहरों पर प्रसन्नता का भाव देखकर बादशाह को आश्चर्य हुआ और उसने पूछा आप इतने लोग एक साथ रहते हैं क्या कभी आपस में झगड़ा नहीं होता? आप लोगों के मन में कोई ईर्ष्या, द्वेष, मनमुटाव तो नहीं है? क्या कोई कठिनाई नहीं आती? सब प्रश्नों का नकारात्मक उत्तर पाकर बादशाह ने पूछा-"आखिर इस पारिवारिक शांति और सुख का राज क्या है?" परिवार के मुखिया ने गंभीर भाव से कहा-हम एक दूसरे को सहना जानते हैं। इसलिए स्नेहिल मैत्रीभाव से रहते हैं। पारस्परिक सौहार्द के लिए सहिष्णुता ही आधार तत्त्व है। सहिष्णुता अहिंसा की जननी है और अहिंसा का अर्थ है किसी को भी मन, वचन, कर्म, से कष्ट नहीं पहुँचाना।

आज सब ओर व्याप्त अशांति का मूल कारण ही असहिष्णुता है जो अलगाववाद को जन्म देती है और रिश्तों में रिसाव तथा सम्बन्धों में सिसक पैदा हो जाती है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के प्रति सहज मैत्री भाव नहीं रख पाता तभी तो विवाद पैदा हो जाते हैं और अशांति व्याप्त हो जाती है। भारत में परिवारों के टूटने का जो सिलसिला बना है वह चौंकाने वाला है। पश्चिमी देशों में बहुत पहले ही यह व्यवस्था भंग हो चुकी है वहां तो सहिष्णुता नाम मात्र भी नहीं होती है। छोटे-छोटे विवाद को लेकर ही न्यायालय पहुंच जाते हैं। आये दिन तलाक होते रहते हैं। भारतीय पारिवारिक संस्कृति में यह परिवर्तन पश्चिम की देन है। जीवन को जीने का ढंग ही बदल गया है। लाइफ स्टाइल में आये परिवर्तन, व्यक्तिवादी मनोवृत्ति, औद्योगीकरण, मकान की समस्या इत्यादि कई कारण हैं जिनसें परिवारों में निकटता का भाव कम होता जा रहा है, बिखराव बढ़ रहा है और परिवार में सौहार्द की कमी आती जा रही है। भले ही व्यावसायिक कारणों से परिवार से दूर रह कर भी सौहार्द का सेतु जुड़ा रहे तो नई उभरने वाली समस्याओं को रोका जा सकता है और परिवार की सुखद एकता बनी रह सकती है।

परिवार छोटा हो या बड़ा, धनी हो या निर्धन, शिक्षित हो या अशिक्षित यदि स्नेह-संपूरित भाव अर्थात् सौहार्द न हो तो सुख शांति प्रेम का स्रोत सूख जाता है और परिवार का विघटन होकर ही रहता है। जो परिवार के झगड़ों के कारण अलग रहने का निर्णय लेते हैं, उन्हें स्थान बदलने की बजाय स्वभाव एवं दृष्टिकोण बदलने की बात सोचनी चाहिए।

एकल परिवार की अपनी समस्यायें हैं। पति के कार्यवश बाहर जाने पर पत्नी व बच्चों को असुरक्षा रहती है। अस्पताल में भर्ती होने पर कौन अस्पताल में मरीज के साथ रहेगा और घर पर कौन रहेगा यह भी समस्या होती है, जबकि संयुक्त परिवार में सभी मिलजुलकर किसी भी समस्या का समाधान कर लेते हैं। एकल परिवार में छोटे बच्चों को दादा-दादी की गोद की स्नेहिल ऊष्मा भला कहां मिल पाती है और यदि पति-पत्नी में झगड़ा हो जाये तो बच्चों का जीवन असहज एवं दुःखमय हो जाता है।

परिवार में विघटन के मुख्य कारण व निवारणः

(1) किसी भी प्रकार का पक्षपात भाव होना। जैसे कि अपने पति या बच्चों में और अन्य बच्चों में भेदभाव करना।

(2) परिवार के सभी सदस्यों की आय समान हो ही नहीं सकती है। इस स्थिति को जैसी है वैसी ही स्वीकारनी होगी। कम आय वाले को सहयोग स्नेह के साथ अधिक उपार्जन हेतु दी गई प्रेरणा, प्रोत्साहन और सहायता के परिणाम सुखद होते हैं।

(3) स्वच्छन्दता की चाह। वैसे यह कोई अस्वाभाविक चाह नहीं है, मानवीय प्रवृत्ति है, किंतु परिवार के सदस्य पर्याप्त पारस्परिक स्वतन्त्रता को स्वीकार लें, पचा लें तो विवाद नहीं होंगे।

(4) यथासंभव भोजन पर सभी लोग साथ बैठे, प्रार्थना भी साथ करें। ताने, कटाक्ष एवं गलतफहमी मन में न पालें, व्यंग्य की बातें या उपेक्षा न करें। स्नेह और प्रोत्साहन एवं प्रशंसा के स्रोत को बहता रखें।

(5) घर के मुखिया का सम्मान करें, आज्ञापालन करें, अपना दृष्टिकोण जो भी स्पष्ट कहें एवं पारिवारिक एकता, प्रेम व मैत्री भाव हेतु मन में गलत धारणा न बनायें। यदि पिता स्वयं अपने माता-पिता व पूज्यजनों को प्रणाम करता है तो उन्हें देखकर बच्चे भी प्रणाम करना सीख जायेंगे।

पारिवारिक जीवन में संयम आवश्यक है। संयम वह कुंजी है जो शांति और आनन्द का द्वार खोलती है। एक अनुरोध मैं बुजुर्ग लोगों से करना चाहता हूँ कि उन्हें अपने जीवन को प्रेममय बनाना चाहिए परिस्थितियों व समय के अनुसार अपने विचारों में भी परिवर्तन करना चाहिए। घर परिवार की जिम्मेदारी को छोड़कर अपने नाती पोतों के साथ खूब प्यार करें, आमोद-प्रमोद करें। प्रतिदिन उनके साथ प्रेमपूर्वक ईश्वर की प्रार्थना, भजन, कीर्तन आदि करें और हंसते मुस्कुराते अपने जीवन के शेष दिनों को प्रेम से व्यतीत करें।

सासूओं को अपनी बहुओं के साथ वही व्यवहार करना चाहिए जैसा वह अपनी बेटियों के साथ करती है। बहू से कोई गलती हो जावे तो उन्हें डांटने के बजाय उसे प्रेमपूर्वक समझाना चाहिए तथा बहुओं को भी सास को अपनी माता के समान समझना चाहिए तथा उनके साथ मिल-जुलकर सभी कार्य सम्पन्न करना चाहिए। परिवार में बालकों को शुरु से अच्छे संस्कार देने के लिए माता-पिता को उन्हें अच्छी-अच्छी बातें सिखानी चाहिए और स्वयं के आचरण को भी अच्छा बनाये रखना चाहिए।

सहनशीलता एक ऐसा गुण है जिसे आप अपना लेंगे तो परिवार में कभी लड़ाई-झगड़ा होगा ही नहीं यदि आपका कभी कोई अपमान करे या आपको आर्थिक नुकसान पहुँचाये तो आप उसे सहन करके क्षमा कर देवें। उसके प्रति क्रोध या बदले की भावना नहीं रखेंगे तो अपमान कर्त्ता या हानि पहुँचाने वाले को कुछ समय पश्चात अपनी गलती का स्वत: ही अहसास हो जायेगा और वह अपने मन के सारे मैल धोकर आपसे क्षमा याचना करेगा। फिर देखिए कितना प्रसन्न होगा आपका मन, चित्त को कितनी शांति व आनन्द मिलेगा। इसलिए अपने हृदय के भीतरी हिस्से से एक-दूसरे के प्रति गलत विचारों को निकालकर दूर फैंक देना चाहिए। जैसे सवेरे सवेरे हम अपने घर को झाड़ पोंछकर स्वच्द बनाते है झाड़ने के बाद जो कचरा इकट्ठा होता है उसे बाहर फैंक देते हैं उसी तरह क्रोध द्वेष की बातें, झगड़े फसाद की बातें, ईर्ष्या मत्सर की बातें रूपी कचरे को भी मन में नहीं रखना चाहिए।

परिवार में एक दूसरे की सेवा करना अपना प्रथम कर्त्तव्य समझना चाहिए। परमात्मा ने हमें जो शरीर प्रदान किया है। उससे हम परिवार, समाज की कुछ सेवा कर सकें तो हमारा जीवन सफल हो जायेगा। आजकल एक नई प्रथा समाज सेवा (सोशल सर्विस) की प्रचलित हो गई है। वस्तुत: समाज सेवा अच्छी बात है। किन्तु परिवार की उपेक्षा करके समाज सेवा करना कहां तक उचित है। लायन्स या रोटरी क्लब के माध्यम से आप अस्पताल में जाकर रोगियों की मदद करते हैं यह खुशी की बात हैं किन्तु उसी समय आपके परिवार में बुजुर्ग दादा दादी, माता-पिता बीमार हों और उन्हें दवा दिलाना आप भूल जाते हैं तो सेवा को केवल प्रदर्शन ही कहा जायेगा। सिर्फ नाम के लिए प्रतिष्ठा के लिए, सम्मान के लिए समाज सेवा करना शोभनीय नहीं है।

सारांश यही है कि पारिवारिक सौहार्द के लिए परिवार के सभी व्यक्तियों में सहनशीलता, सेवा, क्षमा व संयम की भावना होना चाहिए। यदि सभी अपने अहं भाव को त्याग कर सकारात्मक सोच से एक दूसरे के प्रति प्रेम व विश्वास रखेंगे तो परिवार स्वर्ग बन जायेगा। हम अपने घर को मंदिर बनाएं। प्रतिदिन शाम को घर में सत्संग प्रार्थना करें। दूरदर्शन के अश्लील कार्यक्रम तथा अश्लील साहित्य से बच्चों को दूर रखें अच्छे संस्कारों के लिए सत्संग नित्य करें। हमारी यही भावना होनी चाहिए कि मेरा घर स्वर्ग समान हो मुझे अपने परिवार को सुखी बनाना है।

- प्रधान संपादक ''अध्यात्म अमृत'', ज्ञानमन्दिर मदनगंज, किशनगढ़ (राजस्थान)-305801

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/-** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

ईश्वर की अवधारणा

❒ राजेन्द्र प्रसाद आर्य

आज सदियों से लोगों में इस बात की वहस छिड़ी हुई है कि ''क्या ईश्वर है अथवा नहीं'', जिस वजह से मानव समुदाय आज दो वर्गों में विभाजित हो गया है। एक बड़ा वर्ग वो है जो ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखता है वहीं दूसरा वर्ग वो है जो मानता है कि ईश्वर नाम की कोई चीज नहीं है और संसार में जो कुछ भी हो रहा है वो अपने आप ही हो रहा है। और इनकी संख्या भी करोड़ों में है।

यहाँ हम न तो धर्म ग्रन्थों का सहारा ले रहे हैं और न ही कोई तर्क वितर्क बलिक कुछ तथ्यों को प्रस्तुत कर रहे है, देखना होगा कि ये तथ्य किस और ईशारा कर रही है.....

आज दुनियाँ में अरबों खरवों लोग है और इसके पूर्व में भी अरबो खरबों लोग पैदा हुए और मर भी गए, आगे भी कितन अरबो खरबों लोग पैदा होगें पर कितना बड़ा आश्चर्य है कि इनमें से किसी का भी चेहरा किसी अन्य से नहीं मिलता है, यानि सबके चेहरे अलग-अलग प्रकार के हैं, यहां तक कि जुड़वा बच्चों में भी बहुत अधिक समानता होते हुए उनमें भी कुछ अन्तर होता है जिसे उसकी माँ अवश्य ही जानती है। यहां पर यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि वो कौन है? जो हर किसी का एक दूसरे से अन्तर बनायें रखता है। उनका सिर्फ चेहरा ही नहीं उनकी आवाज भी अलग-अलग प्रकार की होती है और सिर्फ आवाज ही नहीं उनके फिंगर प्रिन्ट भी अलग-अलग प्रकार के होते है। यहाँ पर थोड़ी देर के लिए कल्पना किया जा कि उनके चेहरे अलग-अलग प्रकार के न होकर सिर्फ दो प्रकार के हो, पहला मर्दो के लिए अलग और महिलाओं के लिए अलग तो फिर क्या होगा और उनकी आवाजें भी अलग-अलग प्रकार की न होकर एक ही प्रकार हो तो कितनी बड़ी अवयवस्था फैल जायगी। पर ऐसा न होकर अलग-अलग प्रकार की है। निर्माण करने वाले को इसका पुर्वानुमान था, इसी से पता चलता है कि वो कितना बड़ा दूरदर्शी भी है। सिर्फ मनुष्य का चेहरा ही नहीं बल्कि जानवारों का चेहरा भी अलग-अलग प्रकार की होती है तभी तो हजारों भेड़ों की झुण्ड में भी भेड़ का बच्चा अपनी माँ को ढूढ़ लेता है और उसका ही दूध पीता है।

प्रकृति में भी हजारों प्राकर की वनस्पतियों की प्रजातियाँ होती है पर हर वनस्पति के पत्ते, फूल और फल अलग-अलग प्रकार के होते है, सबका रूप, रस, गंध और स्वाद भी अलग-अलग प्रकार के होते है, क्या रहस्य है।

ईश्वर को जानने के लिए बहुत दूर जाने की आवश्यकता नहीं है हम निर्माणकर्त्ता की सबसे अनुपम कृति इस मानव शरीर को देखे तो पता चलेगा कि कितनी ही बुद्धिमता पूर्वक इसकी संरचना की गई है। विज्ञान की विषय है कि कर्त्ता के बिना किसी क्रिया का सम्पादन नहीं होता है और न ही निर्माण। निर्माणा है तो कोई निर्माणकर्त्ता भी होगा, रचना है तो कोई रचनाकार भी होगा। यैसा बिल्कुल संभव नहीं कि निर्माता है मगर निर्माणकर्त्ता नहीं हो। तो आइए थोड़ा देखें कि इस मानव शरीर निर्माण में कितनी बुधिमता पूर्वक कौन-कौन सी चीजे प्रदान किया गया है.....

चमड़ी से ढका मानव शरीर बिना सूई-धागे के किसी प्राकर से सिया गया है कि पता ही नहीं चलता। मानव शरीर में 36 लीटर पानी रहता है, इसमें चीनी 1 किलो अमोनिया 2 किलो, नमक 150 ग्राम, लोहा इतना कि अगर जमा किया जाय तो 2 इंच मोटी कील बन सकती है गंधक इतना कि 100 दिया सलाई की तीलीयाँ बनाई जा सकती है, चर्वी इतना कि इससे 7 साबुन की टिकिया बनाई जा सकती है। 72 करोड़ 72 लाख 10 हजार 110 नस नाड़ियाँ का जाल शरीर के कोने-कोने में फैला हुआ है। आजतक आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी इसकी गिनती नहीं कर सका है।

सवाल है कि मानव शरीर में 36 लटर पानी किसने और क्यों सुनिश्चित की है क्योंकि पानी की मात्रा अगर बढ़ जाय तो भी परेशानी और अगर कम हो जाय तो जान पर बन जाती है इसलिए तुरंत ही बाहर से पानी चढ़ाया जाता है। इसी प्रकार से अन्य चीजों का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है।

आगे देखिए मानव शरीर में 1 मिनट 16-17 श्वासें निरन्तर चल रही है। यह दिल 24 घंटे में 1 लाख 13 हजार वार धड़कता है इस प्रकार यह पूरे जीवन काल में करोड़ो बार धड़कता होगा और फिर एक दिन ऐसा आता है जब दिल धड़कना बंद हो जाता है और फिर जीवन लीला समाप्त हो जाती है, आखिर कौन है इसका नियत्रणकर्ता।

एक वयस्क मानव शरीर में 5-6 लीटर रक्त होता है, महिलाओं में इसकी मात्रा आफ लीटर कम होती है, रक्त का कार्य ताप का नियन्त्रण तथा शरीर को रोगों से रक्षा करना होता है। इस रक्त में निरन्तर संचार होता रहता है जिसे ब्लड सर्कुलेशन कहा जाता है। क्या रक्त संचार अपने आप होता है?

मानव शरीर में 206 हड्डियाँ होती हैं सिर में 29 हड्डियाँ होती है, रीढ़ में 26 रहती है, कपाल में 8, चेहरे में 14 और कान में 6 हड्डियां होती है। ईश्वर की अवधारना में विश्वास नहीं रखने वाले कृप्या यह बतायें कि शरीर में 206 हड्डियाँ क्यों प्रदान की गई है? अगर 206 के बदले में सिर्फ एक हड्डी हो तो क्या हो जायेगा। यही होगा कि न तो हम उठ सकते है, न ही मुड़ सकतें है और न ही चल फिर सकते है। मानव शरीर के दोनों हाथों में 5-5 अंगुलियाँ प्रदान की गई है ये अंगुलियां अगर न हो तो दुनियां का सारा मेकेनिज्म और टेक्नोलॉजी धरी की धरी रह जायेगी। इसका मतलब है शरीर निर्माण के हर बात में विज्ञान छिपा हुआ है।

अब हम मानव शरीर से बाहर आकर इस ब्रह्ममाण्ड को देखें। इस ब्रह्ममाण्ड में सभी ग्रह और नक्षत्र गतिशील है। हमारी पृथ्वी भी अपने अक्ष पर एक हजार मील प्रत्येक घंटे के चाल से लट्टू की तरह घूमती है जिस वजह से दिन और रात होता है। इसी प्रकार हमारी पृथ्वी सूर्य के चारों ओर भी 66 हजार मील प्रति घंटे के रफ्तार से चक्कर लगाती है और 365 दिन 56 मिनट और 46 सेकेण्ड में एक चक्कर लगाती है यही कारण है कि 365 दिनों का एक साल माना जाता है। हमारा सूर्य भी अपने सभी ग्रहों और सौर मण्डलों के साथ लेकर घूम रहा है सूर्य प्रत्येक घंटे में 40 हजार मील के रफ्तार से चलता है। कितना बड़ा आश्चर्य है कि सभी ग्रह और नक्षत्र नियम पूर्वक चलता रहता है, न कभी थकता है, न कभी रूकता है और न ही कभी आराम करता है

(शेष पृष्ठ 17 पर)

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **7000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

आर्य विद्वानों से अनुरोध

प्रतिवर्ष ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित किया जाता है। आगामी **बोधोत्सव 12, 13, 14 फरवरी 2018** को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है और इसी अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित होगा। आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता 01 जनवरी 2018 तक भिजवाकर कृतार्थ करे। लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग, स्वास्थ्य एवम् अन्य उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हो। ऐसा निर्णय किया है कि प्रकाशनार्थ सामग्री टाईप की हुई दो या तीन पुष्ठों से अधिक न हो तो सुविधाजनक रहेगा। आप प्रकाशनार्थ सामग्री ईमेल **tankarasamachar@gmail.com** पर ''वॉकमेन चाणक्य'' टाईप में कम्पोज करके भी भिजवा सकते हैं। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा।

अजय, सम्पादक टंकारा समाचार, चलभाष 9810035658

सम्पादकीय कार्यालय: ए-419, ओ३म् ध्वज सदन, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024

टंकारा समाचार

पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 20 वर्षो से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य है।

आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/- रूपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा या टंकारा समाचार के **खाता नम्बर 0130010101110898, बैंक पी.एन.बी. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC Code-PUNB0466500** में सीधे जमा करके अथवा NEFT करवा कर टंकारा समाचार कार्यालय, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर सूचित करें अथवा मोबाइल नम्बर 09560688950 पर एस.एम.एस. या कॉल कर (अपना आजीवन सदस्यता नम्बर नाम पते सहित भेजें।) ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। **(क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)** **-प्रबन्धक**

एयर इण्डिया हवाई जहाज से दिल्ली से राजकोट/टंकारा सीधे डेढ़ घंटे में

टंकारा के ऋषि भक्तों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि अब दिल्ली से राजकोट के लिए एयर इण्डिया की सीधा फ्लाईट्स आरम्भ हो गई है। ऋषि भक्तों के लिए सुविधाजनक रहेगा। ऋषि भक्तो के सुविधा हेतु 11 फरवरी 2018 रविवार सायं 5.05 बजे एयर इण्डिया फ्लाईट न. 495 राजकोट के लिए जायेगी। राजकोट से टंकारा मात्र 40 किलोमीटर की दूरी पर है। इसी तरह राजकोट से दिल्ली के लिए बुधवार सायं 7.30 बजे एयर इण्डिया फ्लाईट न. 496, टंकारा जाने वाले ऋषि भक्त इसका लाभ उठा सकते हैं।

दयानन्द तो दयानन्द ही था!

❒ सत्यपाल आर्य

भारतवर्ष में उन्नीसवीं शताब्दी जनजागरण का काल है। इस काल में उच्च से उच्च, महान से महान अनेक महामानवों ने जन्म लिया है। उनमें से स्वामी दयानन्द सरस्वती का व्यक्तित्व, कर्तृत्व, नेतृत्व, देश-धर्म सेवा, वेदोद्वार, समाज सुधार संस्कार आदि अपनी महिमा से अलग ही स्थान रखते हैं।

योगीराज अरविन्द के शब्दों-''सभी महापुरुष पर्वतशिखिरों की भान्ति अपनी छटा, अपनी आभा, अपनी सुन्दरता अलग-अलग रूपों में प्रकट करते हैं। सभी एक दूसरे से भिन्न, मनोहर, मनोरम, दर्शनीय प्रतीत होते हैं। किन्तु इन सब उत्संग ऋंगों में सबसे उन्नत गौरीशंकर के समान है अप्रतिम, अद्भुत, अपूर्व महर्षि दयानन्द का बहुआयामी व्यक्तित्व। निराला, विचित्र, ब्रह्मचर्य से उद्दीप्त, तपस्या से कुन्दन, आर्षज्ञान से प्रात्जल, स्वर्णाभिराम, वर्णनातीत है उनका जीवन।''

ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी में जन्म लेकर जिन-जिन महापुरुषों ने भारतीय राष्ट्र, धर्म, समाज, संस्कृति की अपूर्व सेवा की है उनमें दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती के परम शिष्य स्वामी दयानन्द सरस्वती का नाम अनन्यतम है।

''स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824-83) उन्नीसवीं शाताब्दी के पूर्वार्द्ध में प्रारम्भ हुए भारतीय पुनर्जागरण युग के महान युग निर्माताओं में से एक हैं। वे केवल एक सुधारक मात्र ही नहीं थे जिन्होंने भारतीय समाज व धर्म सुधार का एक प्रबल आन्दोलन आरम्भ किया वरन वे एक प्रगतिवादी चिन्तक, दार्शनिक व मनीषी थे।''

''स्वामी जी महाराज पहले महापुरुष थे, जो पश्चिमी देशों के मनुष्यों के भी गुरु कहलाए, जिनको अनेक पश्चिमी मनुष्य गुरु, आचार्य और धर्मपिता मानते थे।

जिस युग में स्वामी जी हुए हैं, उनसे अनेकों वर्ष पहले से आज तक ऐसा एक ही पुरुष हुआ है जो विदेशी भाषा नहीं जानता था, जिसने स्वदेश से बाहर एक पैर भी नहीं रखा था, जो स्वदेश के अन्न जल से पला था, जो विचारों से स्वदेशी था, जो आचारों से स्वदेशी था, भाषा और वेश में स्वदेशी था, किन्तु वीतराग और परम विद्वान होने से सबका भक्ति भाजन बना हुआ था, जिसका देशी, विदेशी सभी मान करते थे। ऊँचे से ऊँचे राजे महाराजे सम्मान करते थे, वह पुरुष महर्षि दयानन्द ही था। महर्षि को छोड़कर भारत के इस युग में एक भी पुरुष ऐसा नहीं हुआ, जिसने विदेशी भाषा न सीखी हो अथवा विदेश यात्रा न की हो और फिर भी स्वदेश में सम्मानित हुआ हो।

''स्वामी दयानन्द जी महाराज के जीवन का मुख्य कार्य धर्म प्रचार था, आर्यो के धर्म को सर्वोत्तम, सबसे पुरातन और ईश्वर प्रदत्त मानते थे। आत्मज्ञान आर्य धर्म की प्रधानता का सूचक है। आत्मज्ञान से आर्यो का पहले भी उत्कर्ष हुआ है। इस तत्व के पाठ इन्होंने सब जातियों को पढ़ाये हैं, इसमें ये सारे संसार के शिक्षक रहे हैं और अब भी हैं।''

इस आत्मज्ञान के मूल स्रोत ईश्वर प्रदत्त वेद हैं। वेद से ही इस तात्विक ज्ञान का नि:संरण हुआ है। इसीलिए श्री स्वामी जी की वेद में अपार भक्ति थी। वे पक्के वेदानुयायी थे। वेद विश्वास और वेद की अपौरषकता को स्थगित कर वे किसी से कभी भी संधि करने को उद्यत न थे।''

''महाराज का परमात्मदेव में परम विश्वास था। वे ईश्वर तत्व का पूरा भरोसा रखते थे। उसी जगदीश की शान्त शरण में रहते हुए वे विपत्ति वज्रपात से भी घबराते नहीं थे। महाराज वेद विश्वास की भांति ईश्वर विश्वास के भी पक्के थे। वेदाज्ञा और एक निराकार ईश्वर भक्ति धर्म के ये दो अंग सार्वजनिक थे। इसी केन्द्र पर सारी जातियों को लाने के लिए आजीवन सचेष्ट रहे।''

वे प्राचीनता की दुर्गा के अनन्य प्रेम से पक्के पूजक थे। आर्यो का अतीत काल, उनको स्वर्णिम आचारों और स्वर्णिम विचारों से समावृत्त, स्वर्ण स्वरूप प्रतीत होता था। आर्यो की पुरानी सभ्यता की अवहेलना वे कदापि सहन नहीं कर सकते थे। उनका निश्चय था कि नवीन मतों ने, महन्तों ने और मठों ने पुरातन काल की महत्ता पर मिट्टी डाल दी है।''

''महाराज सार्वजनिक हित के लिए ही हाथ में तर्क का तीर खण्डन के भूखण्ड में उतरे थे। रोगी के फोड़े फुन्सियों का जब तक छेदन न किया जाये, उसका स्वस्थ होना दुष्कर है। खेतों में से जब तक झाड़ झंखाड़ उखाड़ कर, घास फूस निकाल कर इसका शोधन न किया जाए उसमें खेती का सुफलित होना असम्भव है। ऐसे ही किसी देश और जाति में से जब तक कुरीतियों को दूर न किया जाए और उसके आचार विचार का संशोधन न हो, तब तक उसकी उन्नति के सोपान पर पदार्पण करना महाकठिन है। सुधार का कार्य सर्वप्रिय तो नहीं, परन्तु सार्वजनिक हित से पूर्ण अवश्य हुआ करता है।'' खण्डन खड्ग का अवलम्बन करते समय भी महाराज के महान् हृदय में परहित पूर्ण ही रहा था।''

''स्वामी जी महाराज ने सामाजिक-सुधार में ब्रह्मचर्यावस्था पालन करना अत्यावश्यक बताया हैं। एक-एक दो-दो वर्ष के बालाकों का विवाह करना देश के अध: पतन बताया है।

''उन्होंने वर्णश्रम व्यवस्था को गुण कर्म के अनुसार माना है। किसी जाति के जन का उत्तम तथा निकृष्ट होना जन्म और नाम से नहीं मानते थे।''

''महाराजा शूद्रों के सुधार के बड़े पक्षपाती थे। उन्हें भी सर्जनकर्त्ता की सर्वश्रेष्ठ कृति समझते थे। चतुर्थ वर्ण से घृणा करना, उसे अस्पृश्य समझना उनके निकट मनुष्य पदवी से गिरा हुआ कर्म है। जो लोग कुत्तो को छूते हैं, बिल्लियों से खेलते हैं, भैसों को हाथ लगाते हैं, ऊँटों को स्पर्श करते हैं, घृणित से घृणित जीव जन्तुओं को भी छू लेते हैं और अपने हाथ से पशुओं के चमड़े का बना जूता पहन व उतार लेते हैं, वे मनुष्यों को अछूत समझ उससे दूर भागा करें, यह कितना अन्याय है, अधर्म है, महाराजा शूद्रों को वेदाधिकार देते हुए लिखते हैं, ''जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि सब पदार्थ सबके लिए बनाए हैं, वैसे ही वेद भी सब मनुष्यों के लिए प्रकाशित किए हैं।''

''श्री स्वामी जी ने स्त्री जाति के सुधार का भी परम कार्य किया है। शास्त्र रीति से उनको भी वेदाधिकार दिया है। महाराज स्त्री शिक्षा एवं स्त्रियों का महत्व वर्णन करते हुए लिखते हैं-

''स्त्रियों को भी ब्रह्मचर्य धारण और विद्या ग्रहण अवश्य करना

चाहिए। भारत की स्त्रियों में भूषण रूप गार्गी आदि देवियां शास्त्रों को पढ़कर पूरी विदूषी हुई है।'' देखो, आर्यावत में राजपुरुषों की स्त्रियां दशरथादि राजाओं के साथ संग्राम में कैसे जा सकती थी? स्त्रियों को व्याकरण, धर्म, वैध गणित और शिल्प विद्या अवश्य सीखनी चाहिए।''

''श्री स्वामी जी महाराज से भारतवासियों की दरिद्र दशा छिपी न थी। उन्होंने अपने विस्तृत पर्यटन में अकाल पीड़ित देशवासियों की करूणाजनक अवस्था को अपनी आंखों से देखा था। उनके हृदयबोधक रोदन व करूण कन्दन को अपने कानों से सुना था। श्री स्वामी जी यह भी मानते और जानते थे कि भारत भूमि रत्नगर्भा है, सुजला है, सुफलता है। ऊसर नहीं किन्तु उर्वरा और सस्यशालिनी है।''

''फिर भी यहां भूख, दुर्भिक्ष और अभाव क्यों है? इसका कारण शिल्पकला का भारी अभाव है। विदेशी वस्तुओं की भरमार से यहां के लाखों परिश्रमी निकम्मे व बेराजगार हो रहे हैं। उनके जीवन के अन्तिम वर्षो में उनके धर्मप्रचार और समाज सुधार आदि उदात्त उद्देश्यों से भारतवर्ष में शिल्पकला विस्तारिक करना भी सम्मिलित हो गया था। स्वामी जी जहां देशवासियों की आत्मिक भूख प्यास को वेदोपदेश द्वारा दूर करते थे, वहां उनकी शारीरिक क्षुत्पिपासा को को उपराम करने के लिए शिल्पकला के सुदृढ़ सूत्रपात भी कर रहे थे।''

''स्वामी दयानन्द ने शिक्षा सुधार पर सबसे अधिक बल दिया है। वे जानते थे कि जब तक सर्वसाधारण में सुशिक्षा का प्रचार नहीं होता, तब तक उन्नति नहीं हो सकती। करोड़ो मनुष्यों को एक उद्देश्य पर लाने के लिए शिक्षा सबसे ऊँचा साधन है। वह शिक्षा भी धर्मसहित और जातीय होनी चाहिए।''

ऐसे समय में जबकि मैकाले की शिक्षा नीति की बदौलत भारत का युवक पढ़ लिखकर देश, धर्म, संस्कृति से कटता जा रहा था, स्वधर्म को हेय मानकर तिलाञ्जति देकर ईसाईयत के जाल में फंसता जा रहा था, स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने कालपयी अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में सम्पूर्ण दूसरा समुल्लास शिक्षा नीति को समर्पित किया है। तीसरे समुल्लास सहित उनके व्याख्यानों, लेखों, वेदभाष्य आदि समस्त ग्रन्थ शिक्षा नीति से अछूते नहीं हैं।

सबके लिए समान अवसर, समान सुविधा, समान व्यवस्था की वकालत करने वाले स्वामी युग के प्रथम आचार्य थे। सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास में लिखते हैं-

''सबको तुल्य वस्त्र, खानपान, आसन दिए जाए चाहे वह राज कुमार हो वा राजकुमारी और चाहे दरिद्र की सन्तान हो''। स्वामी दयानन्द का शिक्षा दर्शन जातिपाति, छुआछूत और अमीर गरीब के बीच की खाई की सम्भावना को ही जड़मूल से नष्ट कर देता है।''

अनिवार्य शिक्षा के विषय में स्वामी दयानन्द लिखते हैं-

''राजा को योग्य है कि वह सब कन्या और लड़कों को उक्त समय से उक्त समय तक ब्रह्मचर्य में रखकर विद्वान कराना। जो कोई इस आज्ञा को न माने तो उसके माता-पिता को दण्ड देना, अर्थात् राजा की आज्ञा से आठ वर्ष के पश्चात् लड़का और लड़की किसी के घर में न रहने पावे किन्तु आचार्य के कुल में रहे, जब तक समावर्तन का समय न आवे तब तक विवाह न होने पावें।'' स्वामी दयानन्द ने अनायास बाल श्रम, बाल विवाह, अनेक विवाह, बन्धुआवृत्ति, अशिक्षा, जाति पाति छुआछूत आदि सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने का रास्ता दिया है। स्वामी दयानन्द सहशिक्षा के परम विरोधी थे। वे स्वयंवर विवाह के पक्षपाती थे। वर्णव्यवस्था लागू करके उन्होंने श्रम और सम्पत्ति के अधिकारों की क्रान्तिकारी व्यवस्था प्रदान की है।

आज आवश्यकता है समाज की सड़ी गली व्यवस्था को बदलने के लिए स्वामी दयानन्द के जीवन दर्शन पर चिन्तन और आचरण की।

72, रैड स्क्वेयर मार्किट, हिसार, मो. 9416241024

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं

अथवा

गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

-: निवेदक :-

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

झूठे गुरू, सद्गुरू और परमगुरू

एक विचारोत्तेजक संगोष्ठी

सामाजिक सजगता के लिए प्रख्यात
शिक्षाविदों एवं दार्शनिकों का तर्कपूर्ण उद्बोधन

39 विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संस्थानों तथा रेजिडेंट वेलफेयर एसोसियेशन्स (दक्षिण दिल्ली) का एक संयुक्त प्रयास

दिनांक 19 नवम्बर 2017 (रविवार) सायं 3:30 बजे से 8:00 बजे

स्थान : आर्य ऑडिटोरियम, चंद्रवती स्मारक ट्रस्ट, देसराज परिसर, (इस्कान मन्दिर के पास) सी–ब्लाक, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली

– कुछ भी जानना, सीखना हो, संगीत या गणित! सच्चे, योग्य गुरु की आवश्यकता होती है, और पता लग जाता है कि ये गुरु योग्य हैं या नहीं? किन्तु धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में आसानी से पहचान नहीं होती कि सच्चा गुरु कौन है और झूठा कौन?

– ये पहचान कैसे हो? सच्चे और योग्य गुरु के क्या लक्षण होते हैं?

– जिस समाज में अयोग्य, स्वार्थी, पाखण्डी लोग धर्मगुरु बन बैठें, उस समाज का पतन निश्चित है।

– प्रश्न यह है कि ऐसे धूर्तों की तरफ लाखों की संख्या में लोग क्यों आकृष्ट होते हैं और शिष्य बन जाते हैं?

– ऐसे अयोग्य और भ्रष्ट गुरुओं की भीड़ में सच्चे सन्त, सदगुरु क्या करें? और जिनके मन में धर्म, अध्यात्म की सच्ची प्यास है, ऐसे लोग किधर जायें और कैसे खोजें सच्चे और अच्छे योग्य गुरु को?

– जब भ्रष्ट गुरुओं की भीड़ में कुछ धूर्तों की पोल खुलती है तो सामान्य व्यक्ति भ्रमित हो जाता है और सच्चे गुरुओं के प्रति भी उसकी श्रद्धा कम या खत्म हो जाती है।

– एक प्रश्न यह भी उठा है कि क्या हिन्दू समाज के धर्मगुरु ही भ्रष्ट हैं? बाकी धार्मिक समुदायों के धर्मगुरु बड़े पवित्र, महान् और देवतुल्य लोग हैं?

– सच तो यह है कि पूरा धार्मिक क्षेत्र अधर्म, अज्ञान और अन्धविश्वास से भर गया है।

इन सभी बिन्दुओं पर विचारपूर्ण परिचर्चा आयोजित है, ताकि इन समस्याओं का निवारण हो सके और जिज्ञासु लोग सच्चे गुरु की पहचान के सूत्र समझ कर पाखण्डियों के जाल से बच सके। सदगुरु तो अभीष्ट है ही, परमगुरु से भी कैसे जुड़ सकें कि सत्य और निरभ्रान्त ज्ञान पा सकें? यह भी परिचर्चा का एक विशिष्ट बिन्दु होगा।

आप इसमें सादर आमन्त्रित हैं। व्यस्त समय में से अवकाश निकाल कर कृपया अवश्य पधारें।

संगोष्ठी अध्यक्ष

श्री धर्मपाल आर्य,
प्रधान – दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

पैनल के सदस्य

विषय प्रवर्तन व्याख्यान

डॉ. विनय विद्यालंकार
– एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत) राजकीय पी जी कॉलेज, हल्दवानी, नैनीताल एवं प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड

विशिष्ठ व्याख्यान

स्वामी प्रज्ञानन्द जी महाराज
संस्थापक परमाध्यक्ष
– साँई प्रज्ञाधाम, साकेत, नई दिल्ली

डॉ. वागीश आचार्य
– प्राचार्य, आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय एटा, उत्तर प्रदेश

आशीर्वाद : **श्रीमती संतोष मुंजाल**–हीरो ग्रुप, **स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती**–प्राचार्य, गुरूकुल गौतम नगर, नई दिल्ली

मुख्य अतिथि : **डॉ अशोक के. चौहान**–संस्थापक अध्यक्ष, एमिटी विश्वविद्यालय एवं शिक्षण संस्थान, तथा चेयरमैन, ए.के.सी. ग्रुप
डॉ अमिता चौहान–चेयरपर्सन, एमिटी इंटरनेशनल स्कूल्स

विशिष्ट अतिथि : **श्री रामनाथ सहगल, श्री योगेश मुंजाल, श्री सुमन कान्त मुंजाल, श्री विनय आर्य, श्री दर्शन अग्निहोत्री, श्री ठाकुर विक्रम सिंह, श्री अजय सहगल, श्री सौरभ भारद्वाज, श्रीमती शिखा राय, श्री के.सी. तनेजा, श्री रजनीश गोयनका, श्री आनन्द चौहान, श्री योगराज अरोड़ा, श्री मनीष विदेह, श्रीमती बाला चौधरी, डॉ. मधु गुप्ता, श्री नीतिन्जय चौधरी, श्री गुनमीत सिंह।**

❖ कृपया अपना अग्रिम पंजीकरण करने के लिए **श्री अजय कुमार (9911111989), श्री सुरेन्द्र प्रताप (9953782813), कर्नल गोपाल वर्मा (9811121242)**, से संपर्क करें जिससे उचित व्यवस्था की जा सके। ❖ कृपया 3:15 बजे तक अपना स्थान ग्रहण करें। ❖ ऑडिटोरियम परिसर में पार्किंग की समुचित व्यवस्था है।

❖ इस कार्यक्रम के लिये कृपया "आर्य समाज जी.के.–1" को उदारता पूर्वक सहयोग दें। आर्य समाज जी.के.–1 को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80–जी (5) के अंतर्गत आयकर छूट के योग्य है।

संयोजक : **श्री राजीव चौधरी (9810014097)**

संयुक्त आयोजक : (1) ग्रेटर कैलाश रेजिडेंट एसोसिएशन (जीकेआरए) (2) रेजिडेंट वेलफेयर सोसाईटी, एस ब्लाक जीके 1 (3) आरडब्ल्यूए जीके इन्कलेव 1 (4) भारत विकास परिषद्, दक्षिण दिल्ली (5) वैश्य सभा दक्षिण दिल्ली (6) कैलाश रेजिडेंट एसोसिएशन (7) कैलाश ट्रेडर्स एसोसिएशन (8) ग्रेटर कैलाश क्षेत्र विकास समिति (9) कैलाश वीमेन रेजिडेंट एसोसिएशन (10) अग्रवाल सभा जीके 2 (11) सीनियर सिटिजन एसोसिएशन जीके 1 (12) रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन ईस्ट ऑफ कैलाश (13) न्याय भूमि (एनजीओ) (14) कॉन्फेडरेशन ऑफ सीनियर सिटिजन्स एसोसिएशन ऑफ दिल्ली (15) दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल (16) आर्य समाज कैलाश–ग्रेटर कैलाश 1 (17) आर्य समाज ग्रेटर कैलाश 2 (18) आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी (19) आर्य समाज लाजपत नगर (20) आर्य समाज सफदरंजग एन्क्लेव (21) आर्य समाज कस्तूरबा नगर (22) आर्य समाज कालकाजी (23) आर्य समाज ग्रीन पार्क (24) आर्य समाज मदनगीर (25) आर्य समाज मस्जिद मोठ (26) आर्य समाज अमर कॉलोनी (27) आर्य समाज ईस्ट ऑफ कैलाश (28) आर्य समाज संत नगर (29) आर्य समाज गोविंद पुरी (30) राधा कृष्ण मन्दिर जीके (31) श्री सनातन धर्म मन्दिर सभा जीके 2 (32) महावीर जी मन्दिर (पहाड़ीवाला) जीके 1 (33) शिव मन्दिर एस ब्लाक जीके 1 (34) श्री सनातन धर्म सत्संग सभा जीके इन्क्लेव 1 (35) श्री लक्ष्मी नारायण कालकाजी (36) सनातन धर्म सभा–श्री राधा कृष्ण मन्दिर व राम मन्दिर ईस्ट ऑफ कैलाश (37) गुरुद्वारा गुरुसिंह सभा जीके 1 (पहाड़ीवाला) (38) आर्य समाज हौज खास (39) सर्व सम्मान

मीडिया प्रायोजक

विराट वैभव

टंकारा चलो.....

ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा-2018

कार्यालय-आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244229, उत्तर प्रदेश

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा-10 फरवरी से 18 फरवरी 2018 तक

प्रस्थान : 10 फरवरी 2018 को प्रातः 7 बजे मुरादाबाद से आला हजरत एक्सप्रेस 4311 अप द्वारा।

: 09 फरवरी 2018 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्यसमाज मन्दिर, गंज, स्टेशन रोड, मुरादाबाद।

वापसी : 18 फरवरी 2018 को अमरोहा सायं 5:45 बजे आला हजरत एक्सप्रेस से।

: परिभ्रमण कार्यक्रम:

अजमेर, पुष्कर, पोरबन्दर, द्वारिका, भेंट द्वारिका, सोमनाथपुंरी, राजकोट, टंकारा आदि। ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थलों पर महात्मा गांधी जन्मस्थल, गुरुकुल, सुदामा महल, जहां श्रीकृष्ण को तीर लगा था तथा सोमनाथ मंदिर आदि दर्शनीय स्थलों का परिभ्रमण।

: सहयोग राशि :

प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास तथा परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था आयावर्त केसरी-प्रबंध समिति द्वार होगी। **इस निमित्त 4000/- रूपये की धनराशि देय होगी। यह राशि आप आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के नाम से देय डिमांड ड्राफ्ट द्वारा कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं अथवा 'आर्यावर्त केसरी' के भारतीय स्टेट बैंक शाखा-अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या-30404724002, IFS Code SBIN0000610 में जमा करा सकते हैं, या कार्यालय अमरोहा को नकद हस्तगत कराकर रसीद प्राप्त कर लें। राशि 15 नवम्बर 2017 तक प्राप्त हो जानी चाहिए।** समुचित व्यवस्था में अपका सहयोग प्रार्थनीय है।

यात्रियों को आवश्यक निर्देश:-(AC III व II में भी आरक्षण की सुविधा उपलब्ध है। किराये का अन्तरय देया होगा।)। ❑ गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। ❑ यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें। ❑ ओढ़ने, बिछाने की चादर, टॉर्च, नोट बुक, पैन्सिल, मतदाता परिचय-पत्र, दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तौलिया, शेविंग का सामान, तेल आदि। ❑ बहुमूल्य सामान साथ न रखें। ❑ अपनी औषधि साथ रखें। ❑ आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। ❑ आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, सूचित करें।

नोट: 1. परिस्थितिवश यात्रा की तिथियों तथा परिभ्रमण-स्थलों में आंशिक परिवर्तन का अधिकार संयोजक को होगा। 2. यात्रा रेल में स्लीपर क्लास तथा डीलक्स बस द्वारा सम्पन्न होगी। ए.सी. थर्ड अथवा ए.सी. सेकेण्ड से यात्रा करने के लिए टिकट-मूल्य का अन्तर देय होगा। 3. आवासीय व्यवस्था ट्रस्ट अथवा तीर्थस्थलों पर उपलब्ध व्यवस्था के अन्तर्गत रहेगी। होटल की सुविधा के लिए होटल का वास्तविक शुल्क देय होगा, जिसके लिए पूर्व में अवगत कराना होगा, अथवा यह यथा संभव उपलब्धता पर निर्भर होगा। धन्यवाद।

आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का कार्यक्रम बनाएं.....

डॉ. अशोक कुमार आर्य, यात्रा संयोजक एवं सम्पादक आर्यावर्त केसरी (चलभाष: 09412139333)

हरिश्चन्द्र आर्य-अधिष्ठाता (05922-263412), नरेन्द्रकांत गर्ग-व्यवस्थापक (09837809405)

टंकारा बोधोत्सव 2018

हर्ष का विषय है कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में ऋषि बोधोत्सव का आयोजन सोमवार, मंगलवार, बुधवार 12, 13, 14 फरवरी 2018 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियां अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास (आने की पूर्व सूचना देने पर) एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

निवेदक-रामनाथ सहगल, ट्रस्ट मन्त्री

ऋषि श्राद्ध-तर्पण

રામેન્દુ

મહર્ષિ દયાનન્દે પોતાના સત્યાર્થપ્રકાશ, સંસ્કારવિધિ અને પંચમહાયજ્ઞ વિધાન કહ્યું છે. બલિવૈશ્વદેવ યજ્ઞને એક નામ આપ્યું છે – નિત્ય શ્રાદ્ધ તર્પણ વિધિ. અભિપ્રાય છે સંસારના પ્રાણીમાત્ર અને આપણા પિતૃઓને સદૈવ સ્મરવા.

ગુજરાતમાં દીવાળીના દિવસને આપણે વર્ષનો અંતિમ દિવસ માનીએ છીએ અને દીવાળી પછીના બીજા દિવસથી નવા વર્ષની શરુઆત કરીએ છીએ. ગુજરાતીઓ વ્યાપારી અથવા તો ગણતરીબાજ તરીકે પ્રસિદ્ધ છીએ. વર્ષ પુરું થાય એટલે નફા નુકસાનના લેખા-જોખા કરીને શું મેળવ્યું – શું ગુમાવ્યું એનો હિસાબ કરીએ છીએ. મેળવ્યું તો આવનારા દિવસોમાં એનો ગુણાકાર કઈ રીતે થાય, અને ગુમાવ્યું તો આવનારા દિવસોમાં ધ્યાન રાખીને ગુમાવેલું પાછું મેળવીને નવું મેળવવાની તૈયારી કરીએ છીએ.

પણ વાતનો પ્રારંભ કર્યો છે – નિત્ય શ્રાદ્ધ-તર્પણ વિષયથી.

આર્યોનું – ઋષિ દયાનન્દજીના અનુયાયિઓ એવા આપણું નિત્ય શ્રાદ્ધતર્પણ કયું છે?

જ્યારે ઋષિવરને કોઈએ પ્રશ્ન કર્યો હતો કે આપના અનુગામી કોણ? ઋષિવરે ઉત્તર આપ્યો હતો કે આર્યો મારા અનુગામી હશે. ઋષિવર આપણી – આર્યો પર બહુ મોટી જવાબદારી વિશ્વાસ સાથે મૂકતા ગયા છે કે આર્યસમાજના દસ નિયમો અને સત્યાર્થપ્રકાશ, ઋગ્વેદાદિભાષ્યભૂમિકા તેમજ સંસ્કારવિધિમાં પ્રબોધેલા માર્ગનું અનુસરણ કરીને અન્યોને પણ એ માર્ગે લઈ જઈને વિશ્વને આર્ય બનાવવા માટે ઉદ્યમ કરશે.

દીવાળી પર્વે આવો આપણે પણ આર્યત્વના માર્ગે શું મેળવ્યું ક્યાં કમી રહી ગઈ તેના પર ચિંતન કરીએ.

આર્યસમાજના ત્રીજા નિયમમાં ઋષિનો આદેશ છે – વેદને ભણવા ભણાવવા અને સાંભળવા સંભળાવવા સર્વે આર્યોનો પરમ ધર્મ છે.

આજે આપણી સ્થિતિ શું છે? વેદને ભણાવીએ તો છીએ જાતે ભણતા નથી, સંભળાવીએ તો છીએ સાંભળતા નથી!!!!!!!!!! કેટલા એવા છે કે જેમના ઘરમાં વેદ અને વેદને લગતું સાહિત્ય છે? જ્યારે આપણા ઘરમાં છે જ નહીં તો ભણવાની વાત તો દૂર રહી અને ભણતા જ નથી તો સંભળાવીશું શું?

આવો ભૂલ્યા ત્યાંથી ફરીથી ગણીએ. ચારે વેદ સંહિતા અને વૈદિક સાહિત્ય ઘરમાં રાખીશું, પારિવારિક દૈનિક હવનમાં ક્રમબદ્ધ રીતે ઓછામાં ઓછા પાંચ મંત્રોની આહુતિ આપીને એ મંત્રોનો સ્વાધ્યાય પણ કરીશું, તો જ અન્યોને પણ વેદ તરફ પાછા વાળવા માટે શક્તિસમ્પન્ન થઈશું. આ આપણી ઋષિ તર્પણ માટે પહેલી પ્રતિજ્ઞા છે.

સાથે સાથે જે કોઈપણ વ્યક્તિ અથવા સંસ્થા વેદપ્રચાર માટે કામ કરતા હોય તેમને યથા શક્તિ સામર્થ્ય સહાય કરીશું. માંડવી – કચ્છમાં શ્રી નવીનભાઈ વેલાણી પોતાને ત્યાં આવનાર દરેકને વૈદિક સાહિત્ય ભેટમાં આપતા હોય છે, આપણે પણ તેમનું અનુકરણ કરીએ. તેમ ન કરી શકીએ તો આસપાસના પુસ્તકાલયોમાં, શાળા કોલેજોના પુસ્તકાલયોમાં વૈદિક સાહિત્ય તો ભેટમાં આપી જ શકીએ. ઘરના સદસ્યોના જન્મદિવસ કે લગ્ન દિવસે વિશેષ યજ્ઞ કરીને નજીકના ગુરુકુલોમાં યથાશક્તિ દાન આપીએ. ગુજરાતમાં ટંકારા, રોઝડ, ભવાનીપુર (કચ્છ)માં વૈદિક ગુરુકુલો કામ કરી રહ્યા છે, તેમને સહાય આપીએ.

ઋષિની ક્ષમા માંગીએ.....

હે ઋષિવર! આપનું બલિદાન થયે આજે ૧૩૪ વર્ષ પુરા થયા, તમારું બલિદાન માત્ર અને માત્ર અમારા માટે જ અમારા, સંસારના સર્વે શરીરધારી જીવોના કલ્યાણ માટે થયું છે. અમે તમારા ઋણી છીએ પણ અમે નગુણા.....

- તમે બતાવેલા વેદ ભણવા - ભણાવવાના નિયમનું પાલન કરવામાં કાચા પડ્યા છીએ, ક્ષમા માંગીએ છીએ પણ આવનારા દિવસોમાં આ નિયમ પર ચાલવાનો પુરો પુરુષાર્થ કરીશું.
- સત્યને સમજીઓ તો છીએ પણ અસત્યનો પરિત્યાગ અમે નથી કરી શક્યા, પરિણામે સંસારમાં અવૈદિક મત-મતાન્તરોનો ફેલાવો વધી રહ્યો છે. અમે જે વૈદિકમાર્ગની સત્યતા સમજી ગયા છીએ તેના પર ચાલીને સંસારમાં જ્યાં ક્યાંય પણ અસત્ય-અવૈદિક માર્ગનો પ્રચાર-પ્રસાર થઈ રહ્યો છે તેનો વિરોધ કરવા માટે કટિબદ્ધ થઈશું.
- અમારા પ્રત્યેક કામ ધર્માનુસાર જ કરીશું, પછી તે ગૃહસ્થધર્મના પાલનના હોય, સમાજસેવાના હોય કે પછી રાજનીતિને લગતા હોય. પ્રત્યેક કામ સત્ય અને અસત્યનો વિચાર અને વિવેક કરીને જ કરીશું – સમ્પત્તિ અને સત્તાના લોભને વશ થયા વિના
- સંસારના પ્રાણીમાત્રનું કલ્યાણ એજ અમારો વ્યક્તિગત અને સામાજીક ઉદ્દેશ્ય હશે. તે માટે પ્રથમ ચરણમાં પરિવારમાં દૈનિક હવન-સત્સંગને અનિવાર્ય સ્થાન આપીશું. સંસારના સર્વે ભૂતોના (ગાય આદિ પશુઓ) ના શારીરિક રક્ષણ માટે તત્પર રહીશું. આત્મિક ઉન્નતિ માટે વૈદિક સાહિત્યના સ્વાધ્યાય અને યોગાદિ ક્રિયાઓ કરવા અને કરાવવામાં પ્રમાદ નહીં કરીએ. વ્યક્તિગત અને આત્મિક ઉન્નતીથી જ સામાજીક ઉન્નતિ સહજ અને સરળ બની રહે તેનું ધ્યાન રાખીશું.
- ઘર ગૃહસ્થાથી માંડીને સર્વે મનુષ્યોજ નહીં પ્રાણી માત્ર સાથે પ્રીતિ પૂર્વક યથાયોગ્ય વ્યવહાર રાખીશું. જ્યાં ક્યાંય પણ ન્યાય અને ધર્મથી વિપરીત થતું દેખાશે તો પ્રેમથી સમજાવીશું, ધર્મ સમજાવીશું અને સમય આવ્યે ન્યાયધર્મ જે કહે તેનું પાલન કરીશું.
- અવિદ્યાનો નાશ અને વિદ્યાની વૃદ્ધિ કરવા માટે એટલે કે આપણે આ સંસારમાં શા માટે જન્મ્યા છીએ, ઈશ્વર શું છે, કર્મ વ્યવસ્થા શું છે, ઈશ્વરની ન્યાય વ્યવસ્થા શું છે, પ્રકૃતિ અને પ્રકૃતિના તત્ત્વોમાંથી બનેલી સૃષ્ટિ શું છે, તેનો ઉપયોગ કઈ રીતે કરવો જોઈએ તે વિદ્યાને સમજીને યત્ર-તત્ર-સર્વત્ર તેનો પ્રચાર-પ્રસાર થાય તેવા ઉપાયો કરીશું.
- માત્ર મારી, મારા પરિવારની, મારા સમાજની જ ઉન્નતિથી સંતોષ નહીં પામું, જ્યાં ક્યાંય પણ કોઈપણ સમસ્યોઓ હોય તેના નિરાકરણ માટે યથાશક્તિ ફાળો આપીને સર્વની ઉન્નતિ થાય તે જોઈશ
- જ્યાં જ્યાં મારા વ્યક્તિગત હિત એટલે કે ઘરની અન્દરના જ હિતની વાત હશે ત્યાં ત્યાં હું કામ કરવામાં સ્વતન્ત્ર રહીશ, પણ જ્યારે જ્યારે સામાજીક સર્વહિતકારી હિતની વાત આવશે ત્યારે ત્યારે મારા વ્યક્તિગત સ્વાર્થને ભૂલીને સર્વહિતકારી નિયમોનું પાલન કરીશ.

આ સૂત્રોનું પાલન એજ આપણું ઋષિ તર્પણ છે, આપણે ન ગુણા હોઈએ તો એનું પાલન કરવું જ રહ્યું.

समाचार दर्पण

क्षत्रिय आर्य नेता श्री ठाकुर विक्रम सिंह जी के 75वें जन्म दिवस के अवसर पर आर्यन अभिनंदन समारोह का भव्य आयोजन

ठाकुर विक्रम सिंह जी को शुभकामनाएं अर्पित करते हुए श्री आनन्द चौहान एवम् आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी के प्रधान श्री अजय चौहान जी। इसी अवसर पर टंकारा समाचार के सम्पादक के रूप में अजय टंकारा वाला को सम्मानित करते हुए स्वामी प्रणावानन्द जी।

ठाकुर विक्रम सिंह जी का अभिनन्दन करते हुए श्री श्याम जाजू (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भाजपा) साथ में ठाकुर डॉ. वरूण वीर आर्य।

इस भव्य समारोह की अध्यक्षता स्वामी प्रणवानंद सरस्वती ने की। देश के अलग अलग प्रांतों से आए आर्य जगत के आर्य महिला-पुरूष धर्माचार्य, उपदेशक- उपदेशिका, आर्य समाज के उत्थान में प्रचार-प्रसार के माध्यम से अहम योगदान दे रहे पुस्तक विक्रेता, प्रकाशकों, लेखकों, सम्पादकों, विद्वानों को आर्यन अभिनंदन समारोह के विशाल मंच पर सम्मानित होने का गौरव प्राप्त हुआ। इस समारोह में सभी राज्यों से लगभग 550 लोगों को भेंट स्वरूप एक-एक सुंदर शॉल, बिस्कुट, किताबें, नगदी चैक एवं प्रशास्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

ठाकुर विक्रम सिंह जी द्वारा अपना अमूल्य जीवन आर्य समाज की सेवा में समर्पित कर वैदिक धर्म, मानवता और राष्ट्र की महती सेवा में लगाने के संकल्प को अद्वितीय संकल्प मानते हुए हर प्रांत से आए महानुभावों ने आर्य समाज में मिशाल कायम करने वाला संकल्प बताया। क्षत्रिय सेवा संस्थान ट्रस्ट दिल्ली ने ठाकुर विक्रम सिंह जी के 75वें जन्मदिवस के शुभ अवसर पर राजर्षि की उपाधि से शॉल ओढ़ाकर एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

समारोह में प्रसिद्ध आर्यजन श्री आनंद चौहान, श्री धर्मपाल आर्य, डा. रूप किशोर शास्त्री हरिद्वार, श्री अजय चौहान, श्री रामनाथ सहगल, श्री सत्यानंद आर्य, श्रीमती मृदुला चौहान, श्री अजय सहगल, श्री प्रेमपाल शास्त्री, राजपाल चौहान शास्त्री, विजयपाल आर्य मेरठ आदि की उपस्थिति मंच पर शोभायमान थी। महानुभावों ने अपनी-अपनी उपस्थिति दर्शाते हुए अपने-अपने विचारों से सभी का मनोबल बढाया। महानुभावों ने अपने-अपने संदेश में ठाकुर जी के 75वें जन्मदिवस के अवसर पर कार्यक्रम शोभायमान होने के साथ-साथ युगों-युगों तक याद करने लायक कार्यक्रम बताया। समारोह के पश्चात सभी ने स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया। सभी प्रांतों से आए महानुभावों ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम का कुशल संयोजन टंकारा समाचार के सम्पादक श्री अजय टंकारा वाला द्वारा किया गया।

महामहिम श्री गंगाप्रसाद जी
(पूर्व प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार)
को मेघालय के राज्यपाल बनने पर
ऋषि जन्मभूमि टंकारा
महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट
परिवार की ओर से **हार्दिक बधाई**

आर्य समाज के गौरव

आर्य समाज की जिन लोगों ने तन-मन-धन से सेवा की है और महर्षि दयानन्द के सिद्धांतानुसार जीवन पर चलते हुए आर्य समाज के गौरव को बढ़ाया है। ऐसे 100 विद्वानों का जीवन चरित्र, कार्य, उपदेश आदि के लिए हुए आर्य समाज के गौरव नामक ऐतिहासिक ग्रंथ होगा, जो आर्ट पेपर पर छपेगा। कृपया आप अपना एक रंगीन पासपोर्ट साइज फोटो, जन्म से आज तक का पूर्ण विवरण भेजने की कृपा करें। जिसमें संन्यासी, महोपदेशक, भजनोपदेशक, विदुषी महिलाएं, राजनेता, शिक्षाविद्, लेखक, समाजसेवी, दानी एवं उद्योगपति आदि होंगे, जिनकी आयु 40 वर्ष से ऊपर हो। समिति के निर्णयानुसार प्रकाशित होगा।

ठाकुर विक्रम सिंह, अध्यक्ष
राष्ट्र निर्माण पार्टी, ए-41, द्वितीय फ्लोर, लाजपत नगर-2,
निकट मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली-110024,
फोन-011-45791152, 29842527, 9599107207

अभिनन्दन समारोह सम्पन्न

महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में प्रतिभाशाली बालिका मनस्वी के जन्मदिवस पर यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता वकील आर्षव्रत शास्त्री ने की। मुख्यातिथि समाज सेवी अध्यापिका आशा तनेजा, यज्ञ ब्रह्मा आचार्य बालेश्वर शास्त्री, मुख्य वक्ता पं. रमेशचन्द्र वैदिक एवं प्राचार्या उषा गहलौत एवं प्राचार्या उषा गहलौत, यजमान श्रीमती सोनिया एवं श्री मुकेश आर्य रहें। आचार्य बालेश्वर शास्त्री ने कहा-अथर्ववेद में मन्त्र आया है इदं हविर्यातुधानान् नदी फेनमिवावहत्। जैसे नदी किनारों की गंदगी को बहाकर ले जाती है वैसे ही यज्ञ की अग्नि शरीर तथा घर में विद्यमान रोगों के जीवाणुओं को खींच कर नष्ट कर देती है।

ऋग्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

गोविन्दपुरी रामनगर सोडाला के निवासियों ने ऋग्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया। इसके साथ ही डी.ए.वी. अजमेर के पूर्व प्रोफेसर डॉ. कृष्णा पाल सिंह की सत्प्रेरणा एवं पूर्ण श्रम से चारों वेदों का पारायण पूर्ण हुआ। त्रिदिवसीय यज्ञ के ब्रह्मा पं. भगवान सहाय सहाय विद्या वाचस्पति एवं वेदपाठीगण डॉ. सन्दीपन आर्य, दीपक शास्त्री तथा श्रीमती श्रुति शास्त्री रहे। भजनों की रसधार भी बहाते रहे पं. याद राम, दीपक शास्त्री तथा श्रुति शास्त्री। डॉ. रामपाल विद्या भास्कर के प्रभावी प्रवचन प्रत्येक सत्र में होते रहे। समापन दिवस पर यज्ञ आयोजन समिति के प्रधान रघुनन्दन बंसल एवं सचिव राजेन्द्र आर्य ने यज्ञ के ब्रह्मा, वेद पाठीगण एवं यज्ञार्थ स्थान प्रदाता श्री अशोक भाटिया का सम्मान किया। कोषाध्यक्ष चन्द्रभान चौहान ने नगर के सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधि एवं ऋषि भक्तों का आभार जताया। पौराणिक बहुल क्षेत्र में पारायण यज्ञो का अनुकूल संदेश गया।

वेद प्रचार सम्पन्न

वेद प्रचार कार्यक्रम में यज्ञ पार्क विनय खण्ड-4, गोमती नगर, लखनऊ, में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डाक्टर निष्ठा, विद्यालंकार ने पितृपक्ष पर विचार प्रस्तुत करते हुए श्राद्ध व तर्पण को उनके स्वरूप का वर्णन करते हुए वेदों के आधार पर लोगों से अपील की कि मृतक के नाम पर श्राद्ध व तर्पण को उनके स्वरूप का वर्णन करते हुए वेदों के आधार पर लोगों से अपील की कि मृतक के नाम पर श्राद्ध कर्म अन्धविश्वास है तथा जीवित माता-पिता, नाना-नानी तथा श्रेष्ठ लोगों की सेवा कर स्वयं लाभ उठायें तथा वृद्धावस्था में पितृों की सेवा कर उनका आशीर्वाद लेना ही वास्तविक श्राद्ध है।

इस अवसर पर श्री बी.जी. पालीवाल प्रधानजी, श्री वी.पी. कपूर उप प्रधान, श्री सौरभ सिन्हा, मन्त्री, श्री शिवधर मौर्य, कोषाध्यक्ष तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ कॉलेज के प्रबन्धक व समस्त स्टाफ साथ में स्कूल के विद्यार्थी उपस्थित होकर लाभान्वित हुए।

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ आयोजित

जयपुर पूर्वीय मण्डल आर्य समाज जनता कॉलोनी जयपुर ने वेद प्रचार सप्ताह के अंतर्गत यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया। यजुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वेदकथा के ब्रह्मा आचार्य श्री वीरेन्द्र शास्त्री सहारनपुर रहे। श्रीमती श्रुति शास्त्री (जयपुर) तथा सुश्री रमा शास्त्री (दिल्ली) ने वेदपाठ किया। आर्य जगत् के श्रेष्ठ भजनोपदेशक पं. दिनेशदत्त ने भजन रसधार से श्रोताओं को सराबोर किया। सभी सत्रों में नगर के सभी समाज व ऋषि भक्तों की उपस्थिति बनी रही। समापन दिवस पर प्रधान आर्य समाज ब्रह्म प्रकाश गुप्ता ने आचार्य, भजनोपदेशक एवं वेदपाठनियों का सम्मान किया। कार्यकारी मन्त्री ओम प्रकाश गुप्ता ने सभी उपस्थित जनों का आभार व्यक्त किया। ऋषि लंगर के साथ समारोह विसर्जित हुआ।

प्रख्यात विद्वान् सम्मानित

प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को आर्यसमाज डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली के भव्य सभागार में ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट की ओर से शाल, प्रशस्ति-पत्र एवं 51 हजार रूपये की सम्मान राशि भेंट कर सम्मानित किया गया।

उन्हें यह सम्मान आर्य संस्कृति रक्षक, क्षत्रियों के गौरव एवं राष्ट्रनिर्माण पार्टी के अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह जी ने विशाल जन समुदाय की उपस्थिति में प्रदान किया।

समारोह के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी एवं संयोजक डॉ. रूप किशोर शास्त्री जी थे। श्री श्याम जाजू (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भाजपा), श्री आनन्द चौहान (निदेशक-एमिटी विश्वविद्यालय) एवं श्री धर्मपाल आर्य (प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) की उपस्थिति से कार्यक्रम की गरिमा में वृद्धि हुई।

चुनाव समाचार

आर्य समाज पंचवटी, मालेगांव स्टँड पंचवटी, नाशिक

प्रधान- श्री गुलशन कुमार चड्डा **मन्त्री**- श्री सुरेन्द्र कुमार वर्मा
कोषाध्यक्ष- श्रीमती सरिता नारंग

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल

प्रधान- ओम प्रकाश यजुर्वेदी **मन्त्री**- चतरसिंह नागर
कोषाध्यक्ष- ओमवीर सिंह

वैदिक संस्कृति प्रतियोगिता आयोजित

आर्य समाज खेड़ा अफगान (सहारनपुर) और वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास के संयुक्त तत्वावधान में वैदिक संस्कृति ज्ञान वर्धिनी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। आर्य समाज खेड़ा अफगान, ब्राइट फ्यूचर इन्टर कॉलेज हरपाल, स्वामी केलानाथ कन्या, इन्टर, कॉलेज फन्दपुरी, ज्ञान दीप इन्टर कॉलेज दैध नोर, अजीत सिंह सरस्वती विद्या इन्टर कॉलेज अम्वैहरा, विजय पथिक इन्टर कॉलेज ढकदेवी, रविन्द्रनाथ टैगौर विद्या पीठ इन्टर कॉलेज नकुड़, आर्य कन्या इन्टर कॉलेज गंगोह, महन्त जगन्नाथ दास इन्टर कॉलेज इन्टर कॉलेज बान्दु खड़ी, गुरुकुल शादीपुर यमुना नगर, सहित दस केन्द्रों पर लगभग एक हजार विद्यार्थीयों ने भाग लिया। इस अवसर पर प्रार्य समाज के प्रधान, प्रदित्य प्रकाश ने बताया भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे पुरानी गौरवमयी संस्कृति रही। इस आर्यावर्त देश से ही सदासे सारे विश्व में वैदिक संस्कृति पहुंची। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य भारत को विश्व गुप्ता बनाना है। ताके आज की भटकी युवा पीढ़ी देश के खोये स्वाभिमान संस्कृति पुनः स्थापित कर सके।

साहित्य समीक्षा

पुस्तक का शीर्षकः वेदार्थप्रतीतिः (भाग-1)

संकलयिता और सम्पादकः स्वामी ध्रुवदेव परिव्राजक (कार्यकारी आचार्यः दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़)। **प्रकाशकः** दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट, आर्यवन, रोजड़, पत्रालय-सागपुर, ता. तलोद, जिला-साबरकांठा (गुजरात)-383307, फोन-02770287418, 9409415011, ईमेल darshanyog@gmail.com। **कुल पृष्ठ**-148, गेटअप-आकर्षक, संस्करणः प्रथम जून 2017, मूल्यः 90 रूपये

इस हिन्दी पुस्तक में कुल 124 वेद मन्त्रों के आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत आध्यात्मिक भाषार्थ, व्याख्यान व भावार्थो का संकलन किया गया है। इस पुस्तक में महर्षि दयानन्द रचित वेद भाष्य, आर्याभिविनय, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तथा सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों से संगृहीत कर 124 वेद मन्त्रों के अर्थ को उत्तमता से संकलित किया है। कहीं-कहीं अर्थ की स्पष्टता के लिए आवश्यक टिप्पणियाँ भी दी गई हैं। महर्षि दयानन्द ने वेदों का मुख्य प्रयोजन ईश्वर प्राप्ति या ब्रह्मा विद्या को बताया है। वेदों में ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव का वर्णन करते हुए अनेकानेक मन्त्र पाए जाते हैं। महर्षि दयानन्द ने ऐसे मन्त्रों के रहस्य अपने वेद भाष्यों तथा अन्य ग्रन्थों में खोले हैं। उन्हीं के पुरुषार्थ ने वेदों को कर्मकाण्ड की संकीर्ण कारा से मुक्ति दिलाई है और उन्हें सर्व सत्य विद्या के स्रोत के रूप में प्रतिष्ठित किए हैं। स्वामी ध्रुवदेव जी की यह पुस्तक वेद स्वाध्याय के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। आशा है कि पाठक वर्ग इस पुस्तक का स्वागत करेगा और आर्यो की सर्वाधिक पुरातन वैदिक अध्यात्म विद्या से स्वयं लाभान्वित होगा और अन्यों को भी इससे लाभान्वित करने का प्रयास करेगा।

वैदिक प्रतिभा सम्मान समारोह

आर्य समाज राजगढ़ (अलवर) में पं. नारायण सहाय दीक्षित स्मृति न्यास की ओर से उनके 101 वें जन्म दिवस के अवसर पर एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। श्री दीक्षित जी डी.ए.वी. हाई स्कूल केशरगंज अजमेर के भूतपूर्व विद्यार्थी, शिक्षक एवं आर्य समाज राजगढ़ के नैष्टिक एवं नियमित कार्यकर्त्ता रहे थे।

मोरिशस से पत्र

सोनालाल नेमधारी जी को बधाई

कारोलिन गांव में श्री सोनालाल नेमधारी जी ने आयु के 80 वर्ष पूर्ण सपरिवार अपने प्राँगण में भव्य रूप से श्रावणी एवं गायत्री महायज्ञ का अनुष्ठान किया। इसी उद्देश्य को लेकर परमात्मा को धन्यवाद करने हेतु गायत्री महायज्ञ एवं श्रावणी यज्ञ को सम्पन्न किया गया। यज्ञ पुरोहित पंडित सुमनदेव सुखनाथ जी और पंडिता प्रेमदा लीलकण्ठ जी थे। यज्ञ के बाद अपनी मधुर वाणी से श्री नेमधारी जी ने अपनी जीवन गाथा सुनायी। जीवन में उन्होंने बहुत ही परिश्रम किया है, दो रूपये पागार मजदूर का काम करते थे। विवाह के बाद कारोलिन गांव में किराये के मकान में रहकर जीवन में आगे बढ़े। हिन्दी की पढ़ाई करके उन्होंने 30 साल अध्यापन का कार्य किया। आज तक कारोलिन समाज के सदस्य हैं, प्रधान कई साल तक रहे और तन-मन-धन से समाज-सेवा करते रहते हैं। श्री सोनालाल जी आर्योदय के लेखक भी हैं, जो सुन्दर और अच्छे अच्छे विचार वाले लेख लिखते हैं। कहते हैं कि मेहनत का फल मीठा होता है। आज इतने परिश्रम करने के बाद उनका जीवन सुखमय है, उनकी छः सन्तानें हैं, जो अच्छा जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

श्री सोनालाल और जसमत नेमधारी जी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं और बधाई देते हुए उनको 'जीवेम् शरदः शतम्'-सौ साल जीवित रहने का आशीर्वाद दिया गया।

बुजुर्गो का आशीर्वाद

जॉर्ज बहुत ही नेक स्वभाव के थे। एक दिन उन्होंने एक विकलांग वृद्धा को देखा जिसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था। वे वील चेयर पर बैठी रहती थी। अक्सर उनके वील चेयर को कोई नेक मनुष्य इधर से उधर घुमा जाता था।

एक बार जॉर्ज ने उन्हें बगीचे में सुन्दर फूलों को निहारते पाया तो उनसे बोला, 'माताजी, आप बगीचे के फूलों को इतना ध्यान से क्यों देख रही हैं? वृद्धा बोली, बेटा, मैं यह देख रही हूँ कि प्रकृति कितनी सुन्दर है। उसने पूरी दुनिया में अलग अलग रंग भरे हैं इसी कारण हम सभी अनेक कमियों के होते हुए भी बेहद धनवान हैं। वृद्धा के ये शब्द जॉर्ज के हृदय को छू गए। अब वह जब भी बगीचे में घूमने आते तो अक्सर वृद्धा को वील चेयर पर इधर से उधर घूमाते। इस दौरान उन्होंने देखा कि वील चेयर के लोहे के पहिए जब उबड़ खाबड़ जमीन पर चलते, तो गहर झटके लगते थे। इससे वृद्धा को बहुत तकलीफ होती थी। जॉर्ज बेहद बुद्धिमान थे। उन्होंने उस वील चेयर में सुधार करने की सोची जिससे वृद्धा की जिन्दगी आरामदायक बन सके। इसी दौरान उनकी नजर एक ऐसे पदार्थ पर पड़ी जो बेहद कोमल और लचीला था। वह रबर था उन्होंने रबर के गुच्छे लिए और लोहे के पहियों के किनारों पर उन्हें कसकर लपेट दिया। इससे वील चेयर पर धक्के लगने कम हो गए और वृद्धा को भी बहुत राहत मिली। उसने जॉर्ज को ढेरों आशीर्वाद दिए और बोली, देखना बेटा तुम एक दिन इस दुनिया में बहुत नाम कमाओगे। वृद्धा की बात सत्य साबित हुई। जॉर्ज ने अपनी मेहनत से रबर के टायर्स बनाने आरंभ कर दिए जो शीघ्र ही पूरे विश्व में प्रसिद्ध हो गए। कुछ ही समय में उनकी गिनती विश्व के अमीर और नेकदिल लोगों में होने लगी। ये जॉर्ज सी डनलप थे जिनके रबर के बनाए टायर आज भी दुनिया भर में लोकप्रिय हैं।

(पृष्ठ 1 का शेष)

ठाठ-बाट के साथ महल नुमा आश्रम से डेरे की। एक बात तो हमें कान खोलकर सुन लेनी तथा हृदय खोलकर स्वीकार लेनी चाहिए कि दान के धन से बड़े-बड़े कोठी बंगले जैसे आश्रम बनाने, आधुनिक सुख-सुविधाओं का भोग करने वाले तथा लाखों रूपये दक्षिणा मांगकर कथा प्रवचन करने वाले कभी धार्मिक नहीं हो सकते। धार्मिक होने अधर्म गुरु होने की पहली कसौटी है तपस्या। सुख-दुःख, हानि-लाभ, मान-अपमान, सर्दी-गर्मी, भय-लालच और हार-जीत की चिन्ता न करके परमात्मा की भक्ति-उमा-.... के साथ-साथ समाज कल्याण के कार्यो में कर्त्तव्य भाव से लगे रहने वाला ही सच्चा तपस्वी और सच्चा धर्मात्मा ..... जाता है। केवल समाज सेवा कर दिखावा करना, व्यक्तिगत जीवन में राजसी ठाठ-बाट से महल और किले जैसे आश्रमों, मठों, डेरों में रहना धर्मात्मा के लक्षण नहीं माने जाते।

हमारी भोली धर्म भीरु जनता, धर्म का मर्म नहीं जानती, उसे हर गेरूए कपड़े पहनने वाला साधु-संन्यासी लगता है, हर मठाधीश धर्म गुरु दिखता है। आज जबकि मठ-मन्दिर, आश्रम और डेरे बलात्कार और दुराचार के अड्डे बनते दिख रहे हैं, ऐसे में सच्चे धर्मात्मा, धर्माआर्य और झूठे मक्कार लोगों में अन्तर करना पड़ेगा। यह सच है कि सब साधु-संन्यासी, सब धर्म गुरु बलात्कारी दुराचारी नहीं है, कुछ अच्छे व सच्चे भी हैं लेकिन यह बात भी पक्की है कि सब सच्चे-अच्छे भी नहीं है। इसलिए ऐसे लोगों की पहचाना करने का समय आ गया है। पहचान रूप रंग व वेश-भूषण से तो कभी नहीं हो सकती, सच्चे, झूठे साधु-महात्मा व धर्मगुरु की सबसे बड़ी पहचान तो विद्या है और दूसरी पहचान त्याग-तपस्या और सत्याचाण है। हमारे ऋषियों ने कहा है-'विद्या गुरुणां गुरु' अर्थात् विद्या ही गुरुओं का गुरु है। विद्या शून्य आखण्ड व अन्ध विश्वास फैलाने वाला धर्मगुरु नहीं हो सकता। धर्म का मूल स्रोत महर्षि मनु ने वेद को माना है-वेदो डाखिलो धर्म-मूलम्''। धर्म और ईश्वर का सच्चा स्वरूप जानने-समझने के लिए हम वेद पढ़े। वेद को पढ़ व समझकर ही हम सच्चे धर्म को, सच्चे धर्म गुरु को पहचान सकते हैं तथा स्वयं भी सच्चे धर्मात्मा बन सकते हैं।

– मो. 7597894991

(पृष्ठ 7 का शेष)

इतना ही नहीं ये अरबों खरबों ग्रह और नक्षत्र गतिमान होते हुए भी आपस में नहीं टकारातें है। कैसी है ये व्यवस्था। प्रश्न उठता है कि वो कौन है जो सूर्य और पृथ्वी तथा अन्य ग्रहो और नक्षत्रों में गति का संचार करता है। प्रकाश भी 1 लाख 86000 मील प्रत्येक सेकेण्ड के चाल से चलता है इसी प्रकार आवाज की भी अपनी गति होती है। क्या प्रकाश ओर आवाज ने जो निर्जीव है अपनी गति स्वयं ही निर्धारित कर ली है। इस प्रकार के हजारों प्रश्न है जिसका उत्तर ईश्वर की अवधारणा से इंकार करते हुए दुढ़ना बहुत मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है। मैं तो पहाड़ों और नदियों में जंगलों के झूमते वृक्षों में, समुन्द्र की उफनती लहरों में, झरने के कलकल करते जलप्रताप में, तारों भरे आकाश में, आग की धधकती ज्वाला में इन अरबो खरबो ब्रहमाण्डों में, इस अनन्त विश्व में, इस आकाश के भीतर दिखाई देने वाले इस अन्तिम तारे में भी जिसके 1 लाख 86000 मील प्रत्येक सेकेण्ड की चाल से चलते हुए प्रकाश को पृथ्वी तक पहुँचने में एक करोड़ वर्ष लगते हैं मैं उसी प्रियतम प्रभु को देखता हूँ।

इस लेख के पढ़ने के पश्चात् ईश्वर की सता में विश्वास नहीं करने वाले लोगों में ईश्वर के होने अथवा नहीं होने की जो भ्रान्तियाँ है, वो दूर हो सके तो इसे हम अपना अहोभाग्य सकझेगें।

– प्रचारमन्त्री, आर्य समाज, मुजफ्फरपुर, बिहार

दिनांक 12, 13, 14 फरवरी 2018 को आयोजित ऋषि बोधोत्सव हेतु दिल्ली से राजकोट जाने वाली गाड़ियां का विवरण

(1) देहरादून ओखा उत्तरांचल एक्स., ट्रेन न. 19266 नई दिल्ली से राजकोट दोपहर, 1.10 बजे रविवार दिनांक 04.02.2018 **(2) सर्वोदय एक्सप्रेस, ट्रेन नं. 12478,** नई दिल्ली से राजकोट रात्रि 9.25 बजे रविवार दिनांक 04.02.2018 **(3) हापा एक्सप्रेस, ट्रेन न. 12476,** नई दिल्ली से राजकोट रात्रि 9.25 बजे सोमवार दिनांक 05.02.2018 **(4) सराय रोहिल्ला पोरबन्दर एक्सप्रेस, ट्रेन न. 19264,** सराय रोहिल्ला से राजकोट प्रातः 8.20 बजे सोमवार दिनांक 05.02.2018 **(5) पोरबन्दर एक्सप्रेस, ट्रेन न. 19270,** पुरानी दिल्ली से राजकोट दोपहर 12-55 बजे मंगलवार दिनांक 06.02.2018 **(6) पोरबन्दर एक्सप्रैस ट्रेन न. 19264** प्रातः 8.20 वीरवार दिनांक 08.02.2018 सराय रोहिला से राजकोट **(7) सराय रोहिला राजकोट एक्सप्रैस ट्रेन न. 19580,** दोपहर 1.10 बजे दिनांक 09.02.2018 सराय रोहिला से राजकोट। **(8) आश्रम एक्सप्रेस, ट्रेन न. 12916,** पुरानी दिल्ली से अहमदाबाद प्रतिदिन 3.00 बजे, अहमदाबाद से बस द्वारा **(9) राजधानी एक्सप्रेस, ट्रेन न. 12958,** नई दिल्ली से अहमदाबाद प्रतिदिन सायं 7.35 बजे, अहमदाबाद से बस द्वारा।

राजकोट से दिल्ली जाने वाली गाड़ियाँ: (1) हापा एक्सप्रैस, ट्रैन न. 12475, राजकोट से नई दिल्ली बुधवार दिनांक 14.02.2018 सुबह 6.50 बजे। **(2) राजकोट सराय रोहिला एक्सप्रैस, ट्रैन न. 19579,** राजकोट से सराय रोहिला वीरवार दिनांक 15.02.2018 दोपहर 12.15 बजे। **(3) मोतिहारी एक्सप्रैस, ट्रैन न. 19269,** राजकोट से पुरानी दिल्ली वीरवार दिनांक 15.02.2018 सायं 7:32 बजे। **(4) आश्रम एक्सप्रेस, ट्रैन न. 12915,** अहमदाबाद से पुरानी दिल्ली प्रतिदिन सायं 5.45 बजे, अहमदाबाद तक बस द्वारा। **(5) राजधानी एक्सप्रेस ट्रेन न. 12957,** अहमदाबाद से नई दिल्ली प्रतिदिन सायं 5.25 बजे अहमदाबाद तक बस द्वारा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, मांडले (बर्मा) के कार्यक्रम पर पदम्श्री आर्यरत्न डॉ. पूनम सूरी का संदेश

पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी

> ***मैं दिल से ये महसूस करता हूँ कि साथ मिलकर चलने, साथ मिलकर बोलने के भावों के साथ-साथ चित्त और मन के स्तर पर एक विश्व-स्तरीय एकता और सद्‌भाव उत्पन्न होना अभी बाकी है। यह एक ऐसी नींव है जिसके ऊपर श्रेष्ठ मानवता का भवन बनाया जाना है।***
>
> *- पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी*

आइए, सबसे पहले हम मिलकर उस पावन वेदमन्त्र का उच्चारण करें जो स्वामी दयानन्दन जी का सबसे प्यारा मन्त्र था.....

'ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि
परासुव यद् भद्रं तन्न आसुव'।

हे प्रभु, मांडले (म्यांमार) में आयोजित हो रहे इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की सफलताको लेकर जितनी भी विघ्न-बाधाएँ हैं, उन्हें दूर कर दो और इस महासम्मेलन को कलयाणमय सफलता प्रदान करें। ये मेरा बहुत बड़ा सौभाग्य है कि प्रिय विनय आर्यजी और समस्त आयोजकों की ओर से मुझे विश्व-भर की इस महान गतिविधि में मुख्य-अतिथि के रूप में उपस्थित होने का निमन्त्रण मिला। मेरी हार्दिक इच्छा थी और विनय आर्यजी से मैंने इसकी अभिव्यक्ति भी की थी कि मैं इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में उपस्थित होकर आप सबके साथ आर्य समाज से संबंधित विषयों पर गंभीर विचार-विमर्श कर सकूँ। प्रादेशिक सभा, डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी और कैलाश सत्यार्थीजी के साथ मिलकर आयोजित की जा रही 'भारत यात्रा' के चलते मैं दिल्ली छोड़ने में असमर्थ हो रहा था, इसलिए मैंने यह उचित समझा इन पंक्तियों के माध्यम से अपने हृदय के उद्‌गार आप सब महानुभावों के समक्ष रखूँ।

देवियो और सज्जनों! अक्टूबर मास हर वर्ष हमें स्वामी दयानन्द सरस्वती के उस महान बलिदान की याद दिलाता रहता है जिसके लिए उन्होंने रूढ़िवाद, पाखण्ड, अंधविश्वास, अज्ञान, अविद्या, अन्याय और अभाव के नाश के लिए एक ऐतिहासिक लड़ाई लड़ी। दुनिया का कोई भी स्वार्थ, प्रलोभन, भय अथवा दुराग्रह उन्हें अपने पग से विचलित न कर पाया। वेद, सत्य और धर्म का प्रचार-प्रसार करने वाले स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज अब 142 वर्ष का हो गया है और कुछ ही वर्ष बाकी हैं जब हम इस विश्व-जनीन आंदोलन के 150 वर्ष मनाएंगे। आइए, आज सब मिलकर उस दिव्य विभूति के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए संकल्प लें कि आर्य समाज, जिसे स्वामी दयानन्द अपना असली उत्तराधिकारी मानते थे, उनके उन समस्त उद्‌देश्यों और लक्ष्यों को पूर्ण करने में जी-जान लगा देगा।

मित्रो, अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, आर्य समाज के परिवेश को एक ऐसा सार्थक और सक्रिय मंच उपलब्ध करवाता है जहाँ आपसी विचार-विमर्श के साथ-साथ विश्व-भर में कार्यरत् आर्यसमाजों से परिचय और संबंध भी स्थापित होता है। वास्तव में यह महासम्मेलन **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** के मन्त्र को सार्थक करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। मुझे बड़ी प्रसन्नता है जब विनय आर्यजी ने इस वर्ष के अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को मांडले (म्यांमार) में आयोजित करने की सूचना दी। म्यांमार वह देश है जहाँ ऋषि के समर्पित शिष्यों ने आर्य समाज की लौ को जलाए रखने में अपना अमूल्य योगदान दिया। मैं इस देश के उन आर्यो के प्रति नतमस्तक हूँ और इस महासम्मेलन के आयोजकों को बधाई देता हूँ कि आपने इस आयोजन के लिए मांडले (म्यांमार) को चुना है। आर्य सज्जनों, इस प्रकार के सम्मेलन पर उपस्थित होकर हम सब का ये कर्त्तव्य हो जाता है कि हम आर्य समाज की उपलब्धियों का उत्सव तो मनाएं, लेकिन साथ ही देश और विश्व की वर्तमान सामाजिक और नैतिक परिस्थितियों पर अत्यंत गंभीरता से विचार करें। अपने देश की बात करूँ तो आर्य समाज के 142 वर्ष पूरे होने के बाद भी मैं दिल से ये महसूस करता हूँ कि साथ मिलकर चलने, साथ मिलकर बोलने के भावों के साथ-साथ चित्त और मन के स्तर पर एक विश्व-स्तरीय एकता और सद्‌भाव उत्पन्न होना अभी बाकी है। यह एक ऐसी नींव है जिसके ऊपर श्रेष्ठ मानवता का भवन बनाया जाना है।

'हम कौन थे? क्या हो गये? और क्या होंगे अभी?
आओ विचारों बैठकर ये समस्याएं सभी।'

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, इससे संबंधित समस्त आर्य समाज और डी.ए.वी. परिवार का ये सरोकार है कि नैतिकता और सदाचार का जितना प्रचार-प्रसार हो सके, उससे अधिक करने का प्रयत्न करें।

यहाँ मुझे महाभारत का वह प्रसंग याद आता है जहाँ धृतराष्ट्र ने दुर्योधन को इस सवाल का जवाब दिया कि 'शील' क्या है? जिसके जाने से सब कुछ चला जाता है। मैं समझता हूँ कि 'शील' है नैतिकता और सदाचार। जहाँ सदाचार नहीं है, नैतिकता नहीं है, वहाँ न धर्म रहेगा, न सत्य रहेगा, न श्री (लक्ष्मी) रहेगी और न ही वह यश प्राप्त होगा जिसकी हम आचमन मन्त्रों में कामना करते हैं।

'संगच्छध्वम्, संगदध्वम्' सं वो मनासि जानताम्'

इस मन्त्र को अपने जीवन का मूल-मन्त्र बनाएं और फिर पूरे विश्व को श्रेष्ठ आर्यो से भर दें। आप सब विश्व के कोने-कोने से अपनी समस्त व्यस्तताओं को छोड़कर, विभिन्न विघ्नों और कष्टों को झेलते हुए यहाँ उपस्थित हुए हैं, इसके लिए मैं आप सब का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आप सब दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें, सानन्द रहें और आर्य समाज को आगे ले चलने में इसी प्रकार अपना सक्रिय योगदान देते रहें।

(पृष्ठ 2 का शेष)

भारत यात्रा के जन जागरण उद्घोषों के साथ उत्साहवर्धन किया। इसी कड़ी में मुम्बई आगमन पर एक भव्य स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुम्बई एवम् दिल्ली के छात्र-छात्राओं ने मुम्बई के विभिन्न भागों में भारत यात्रा आने से पूर्व बाल शोषण, बाल बलात्कार एवम् बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ जैसे विषयों पर जन जागरण हेतु नुक्कड़ नाटकों का मंचन किया। साथ ही जहां-जहां संभव हो सका वहां ध्वज लेकर उद्घोषों के साथ यात्रा का स्वागत भी किया। डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के भव्य प्रागण में एक स्वागत समारोह का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के उपप्रधान श्री प्रबोध महाजन, कोषाध्यक्ष श्री महेश चोपड़ा एवम् राजस्थान डी.ए.वी. शिक्षक संस्थाओं की निर्देशिका श्रीमती जुनेजा काकरिया एवम् स्थानीय प्राचार्य श्री जोश कुरियन जी उपस्थित थे। इस अवसर पर डी.ए.वी. के छात्र-छात्राओं ने भारत यात्रा से सम्बन्धित बाल शोषण के विषयों पर गीत संगीत एवम् लघु नाटिकाएं प्रस्तुत की। इस अवसर पर एक विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए माननीय कैलाश सत्यार्थी जी ने कहा कि डॉ. पूनम सूरी जी का इस आन्दोलन के साथ हाथ मिला एवम् आशीर्वाद देकर हमारे इस प्रयास में एक नया उत्साह एवम् संभल मिला। इस अवसर पर भारतवर्ष के सभी डी.ए.वी. के छात्र-छात्राओं का भी धन्यवाद करना चाहता हूं कि क्योंकि उनके सहयोग से यात्रा की सफलता संभव नहीं थी।

आपने आगे कहा कि मैं पिछले तीन दशकों से बचपन बचाओ आन्दोलन से जुड़ा हुआ हूँ जिसमें विशेषकर मेरा कार्यक्षेत्र बाल मजूदरी के विरूद्ध ही रहा। लेकिन आज के परिप्रेक्ष्य में छोटी बेटियों के साथ शारीरिक शोषण ने मेरे हृदय को इतना झकझोर दिया कि मुझे लगा कि बाल मजदूरी से भी अधिक बेटीयों का शोषण का विरोध अधिक महत्वपूर्ण है और मुझे यह **सुरक्षित बचपन सुरक्षित भारत** यात्रा को करने का उत्साह आया।

मैं अकेला ही चला था जानिब-ए-मंजिल मगर, लोग साथ आते गए और कारवाँ बनता गया।

भारत यात्रा के सफल प्रयास का मुझे कोई श्रेय नहीं जाता। मैं अकेला ही चल पड़ा था लेकिन डी.ए.वी. और विशेषकर पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी का साथ मिलते ही मेरा यह प्रयास एक बृहद् रूप को प्राप्त हो गया पाया। (स्थानीय संवाददाता द्वारा)

फर्क सिर्फ सोच का होता है
वरना सीढ़ियाँ वही होती हैं
जो किसी के लिए ऊपर जाती हैं
और किसी के लिए नीचे आती हैं।

टंकारा समाचार नवम्बर 2017
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2015-16-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2015-16-17
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-11-2017
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.10.2017

क्या खुशबू, क्या स्वाद,
एम डी एच मसाले हैं खास

94 साल के महाशय जी जिन्हें अब 82 सालों का तजुर्बा है। इन्होंने 12 वर्ष की उम्र में ही काम करना शुरू कर दिया था। ऐसा लगता है कि इनका जन्म मसालों में ही हुआ है और मसाले ही इनका जीवन है। महाशय जी की ईमानदारी, मेहनत, लगन और मसालों का तजुर्बा ही एम.डी.एच. मसालों को सर्वश्रेष्ठ बनाता है।

खाइये और खिलाइये मज़ेदार स्वाद का आनन्द उठाइये

MDH
मसाले

असली मसाले
सच–सच

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015, 011-41425106-07-08
E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com
ESTD. 1919

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय